

जून २०१२

दादावाणी

मूल्य: ₹ १०



इन पैरों में दर्द होता हो तो मैं क्या कहता हूँ, 'अंबालालभाई, आपके पैरों में बहुत दर्द हो रहा है न? ऐसे ही सिकुड़कर बैठे हैं, इसलिए पैरों में दर्द हो रहा है।' तब कंधा थपथपाकर कहता हूँ कि 'हम शुद्धात्मा भगवान हैं न आपके साथ, फिर क्यों डरते हो?' इसलिए फिर वे फर्स्टक्लास हो जाते हैं।

तंत्री तथा संपादक :
डिम्पल महेता

वर्ष : ७, अंक : ८
अखंड क्रमांक : ८०
जून २०१२

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ. : अडालज,
जि. : गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100
e-mail :

dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

Printed & Published by

**Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation**

5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Owned by

Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printed at

Amba Offset

Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Editor : Dimple Mehta

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ८०० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

बातचीत का प्रयोग, वेदनीय में

संपादकीय

आत्मज्ञान मिलने के बाद अब ये देह, जिसे हम फाइल नं-१ कहते हैं, वो क्या है? तो कहे, वह डिस्चार्ज कर्मों का पुतला, जिसे परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) 'प्रतिष्ठित आत्मा' कहते हैं। पूर्वजन्म में अज्ञानता से जो प्रतिष्ठा हुई, उससे जो कर्म चार्ज हुए वे अब डिस्चार्ज हो रहे हैं। ये डिस्चार्ज हो रहे कर्म, शाता या अशाता वेदनीय के रूप में फल देते हैं। उन कर्मों का फल तो भुगतना ही पड़ेगा न? उन कर्मों का फल भुगतने से कोई भी, खुद भगवान भी बच नहीं पाते। किन्तु फर्क कहाँ पड़ता है? तब कहे, 'ज्ञानी वेदे धैर्य थी अने अज्ञानी वेदे रोई।' ज्ञानी पुरुष निरंतर आत्म स्वरूप में रहते हैं, इसलिए उनको वेदना स्पर्श नहीं करती। जब कि अज्ञानी, 'ये मैं ही हूँ' और 'मुझे हुआ' मानता है, इसलिए फिर वेदनीय कर्मों के असर से मुक्त नहीं रह सकता। यानी वह खुद शाता वेदनीय में सुख का भोक्ता और अशाता वेदनीय में दुःख का भोक्ता बनता है।

कोई भी व्यक्ति, उदय में आए हुए शाता या अशाता वेदनीय कर्म में हमेशा तन्मयाकार ही होता है और उस वेदनीय को भोगनेवाला तो अहंकार है। अब हम सब उस अहंकार से मुक्त हो गए, इसलिए वास्तव में हम वेदनीय कर्म के भोगनेवाले या वेदनेवाले नहीं रहे, किन्तु उसके ज्ञाता-दृष्टा हो गए। ज्ञाता-दृष्टा रहने से देह की वेदनीय हमें स्पर्श नहीं कर सकती। किन्तु ये ज्ञान कृपा से मिला है, इसलिए एकदम से तो ज्ञाता-दृष्टा नहीं रह सकते, तो फिर इसका उपाय क्या है? तो कहे, ज्ञानजागृति। पाँच आज्ञा के पालन से ज्यों-ज्यों आत्मजागृति बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों देह से वह भिन्न रूप से बरतकर वेदनीय के असर से मुक्त रह सकता है।

यहाँ पर दादाश्री स्वानुभव का सुंदर प्रयोग बताते हुए कहते हैं कि फाइल नं-१ के साथ बातें करने से, फाइल नं-१ में उद्भव होनेवाली वेदनीय में संपूर्ण रूप से मुक्त रह सकें ऐसा है। देह की वेदनीय खुद को (आत्मा को) स्पर्श नहीं कर सकती, ये अनुभव हमें फाइल नं-१ के साथ के बातचीत के प्रयोग से प्राप्त होता है।

दादाश्री इसका विज्ञान समझाते हुए कहते हैं कि, वेदनीय का स्वभाव कैसा है? 'मुझे हुआ, मुझे दर्द हो रहा है' कहा तो उसका मल्टिप्लिकेशन होकर अनेक गुना हो जाता है। और 'ये मेरा नहीं है', 'मतलब मुझे नहीं हो रहा किन्तु ये तो फाइल का हिसाब चुकता हो रहा है', ऐसा कहकर अलग रहे, तो भोगवटा, उसके भाग होकर, कम होते-होते निःशेष भी हो सकता है। वास्तव में वेदनीय वह साइकोलोजिकल इफेक्ट ही है और बातचीत का प्रयोग इस इफेक्ट में से असरमुक्त रहने का अद्भुत साइन्टिफिक (वैज्ञानिक) प्रयोग है। इस प्रयोग के द्वारा खुद निरंतर असरमुक्त रहकर स्वानुभव में और मुक्तानंद में रह सकते हैं, जिस दशा में पूज्य दादा भगवान रहते थे।

ऐसी दशा, ज्ञान लिए हुए महात्माओं को भी प्राप्त हो सके ऐसा है। किन्तु ये कब मुमकिन है, कि जब खुद स्वपुरुषार्थ में आए तब और उस पुरुषार्थ में आने के लिए बातचीत का प्रयोग ये असरकारक चाबी है। जिसके द्वारा, उस दशा तक पहुँचने के ध्येय को सिद्ध किया जा सकता है। प्रस्तुत संकलन हमें देह के वेदनीय कर्मों के समक्ष जागृति के पुरुषार्थ की श्रेणी प्रारंभ करने के अभ्यास में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में सहायक होगा।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

बातचीत का प्रयोग, वेदनीय में

‘मुझे हुआ’ कहा कि लिपटा

प्रश्नकर्ता : हम शुद्धात्मा हैं, हम ज्ञाता-दृष्ट हैं ऐसा हमें लगता है, किन्तु फिर भी मन में जो सुख-दुःख की वेदना होती है तो वो किसलिए होती है?

दादाश्री : वो तो होनी ही चाहिए। जितने चाय के प्याले हम पीनेवाले हैं, उतने भीतर लेकर आए हैं, कड़वा-मीठा दोनों पीना पड़ेगा। मीठा लगता है तब जो मन को ज़रा अच्छा लगता है। कड़वा आए तब ज़रा मन को खराब लगता है, हमें तो दोनों को जानना है, राग-द्वेष नहीं करने हैं।

वेदनीय को ऐसा कहोगे कि ‘यहाँ मत आना’ तो वो वेदनीय जो आठ फुट ऊँची थी वो अस्सी फुट ऊँची होकर आएगी, और हम कहें कि आप जल्दी आओ, तो जो आठ फुट ऊँची की होती है वो दो फुट की ही दिखती है और वेदनीय का काल पूरा हो जाए तो वो रुकती नहीं है। जो रुकनेवाली नहीं हो, वो तो हमारी ‘गेस्ट’ कहलाती है। ‘गेस्ट’ के साथ तो हमें अच्छा वर्तन रखना चाहिए न? संयम रखना पड़ता है, आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : ऐसा लगता तो है दादाजी, किन्तु सहन नहीं होता।

दादाश्री : सहन नहीं होता, वो तो ‘साइकोलोजिकल इफेक्ट’ (मानसिक असर) है। तब ‘दादा, दादा’ यों नाम लें और ‘मुझे सहनशक्ति दीजिए’ ऐसा कहें तो वैसी शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं।

प्रश्नकर्ता : दो दिनों से सिर दर्द हो रहा था, वो ज़रा भी सहन नहीं हो रहा था।

दादाश्री : ‘मुझसे सहन नहीं हो रहा’, ऐसा कहा कि वो लिपटा! लेकिन ‘हमें’ तो कहना है, “चंदूभाई, सिर में बहुत दर्द हो रहा है? मैं हाथ फेर देता हूँ, कम हो जाएगा”। लेकिन, ‘मुझे दर्द हुआ’ कहा, कि चिपका! ये तो बहुत बड़ा भूत है!

वह मैं नहीं, मैं तो अलग

प्रश्नकर्ता : ठीक है। इनको साठ सालों से साइनस का रोग है, अब उससे मुक्त किस तरह रहा जाए?

दादाश्री : खुद निरोगी है ऐसा जाने, तब वो मुक्त ही हुआ न! खुद रोगीष्ट है ही नहीं ऐसा उसको यक्रीन हो जाए तो फिर मुक्त ही है न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन रोग होने के बावजूद, निरोगी है ऐसा यक्रीन कैसे आए?

दादाश्री : यही बात है न, कि रोग हो फिर भी निरोगी है ऐसा खुद को यक्रीन हो जाए तो फिर निरोगी ही रहता है।

प्रश्नकर्ता : नाक में से पानी बहता हो और हम ऐसा कैसे कह सकते हैं? वो निरोगी कैसे हो सकता है?

दादाश्री : किन्तु देखो, इनको हार्ट अटेक आया था न, उस समय खुद अलग रहते थे न? इस तरह

वो भी रह सकते हैं। इनको अटेक आया था फिर भी कहने लगे, 'वह तो मैं नहीं हूँ, मैं तो अलग हूँ'। ऐसा भान आना चाहिए न? गप्प नहीं चलेगी। 'मुझे हो गया, मुझे ऐसा हो गया' कहा, तो असर होता है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा सोचते हैं कि 'ये मुझे नहीं हुआ, ये तो इसे (फाइल नं-१ को) हुआ है' लेकिन जब पीड़ा होती है, तब फिर भीतर एक हो जाता है।

दादाश्री : और फिर अपने पर ले लेता है। हाँ, फिर ऐसा लगता है कि मुझे ही पीड़ा हुई। पीड़ा होने से आत्मा घट नहीं जाता या बढ़ भी नहीं जाता, तो फिर भीतर ऐसा क्या होता है?

प्रश्नकर्ता : हम निरंतर सोचते रहते हैं कि 'मुझे नहीं हो रहा, मुझे नहीं हो रहा', और जैसे ही दर्द होने लगे कि एकदम से फिर एक हो जाते हैं।

दादाश्री : मतलब जितना इस देह ने सुख का स्वाद चखा है, उतना ही इस देह को दुःख का स्वाद भी चखना पड़ेगा। हाँ, क्योंकि इस देह के जो सुख हैं, वे आपको किशत वापस भरने की शर्त पर ही लेने हैं। ये किशतें वापस भरनी पड़ेगी। जो सुख चखा हो, उसका फल तो भुगतना ही पड़ेगा। उसमें भी आप तो अलग ही हो। आत्मा तो वैसे का वैसे ही रहता है।

प्रश्नकर्ता : आत्मा तो वही का वही रहता है। किन्तु 'मुझे पीड़ा हुई', ऐसा नहीं लगना चाहिए।

दादाश्री : आप तो, पीड़ा नहीं हो फिर भी पीड़ा को बुलाते हो। अरे! सिर चढ़ गया, कहाँ चढ़ गया? आकाश पर जाकर बैठ गया क्या?

कहो, 'हम हैं न आपके साथ'

प्रश्नकर्ता : कोई रास्ता निकले इसलिए तो ये प्रश्न पूछ रहा हूँ।

दादाश्री : आप मुझसे पूछ लेना। मैं जो कहूँ उसके अनुसार करना। रास्ता तो यही है। और अपने सिर पर तो लेना ही नहीं चाहिए कि, मुझे दर्द हो रहा

है। कोई कहे कि, 'क्यों, आपको क्या हुआ है?' तब कहना है कि, 'पड़ोसी (फाइल नं -१) को सिर दर्द हो रहा है, उसे मैं जानता हूँ'। और 'ये' पड़ोसी हैं ऐसा 'आपको' यकीन हो गया है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : तो फिर दुःख किस लिए? पड़ोसी रो रहा हो तो क्या हमें भी रोने लगना है? पड़ोसी के यहाँ तो झगड़े होते ही रहेंगे और पत्नी के साथ किसके झगड़े नहीं होते? 'हम' (आत्मा के तौर पर) तो बिन-ब्याहे हैं, 'हम' क्यों रोएँ? जिसने ब्याह किया है वो रोता है। 'हमने' ब्याह नहीं किया! विधुर भी नहीं हुए! 'हम' किस लिए रोएँ? हमें तो पड़ोसी को चुप करवाना चाहिए कि 'भाई, रोना मत, हम आपके साथ हैं। डोन्ट वरी, घबराना मत', ऐसा कहना है।

दादा करे अपने अनुभव की बात

पैरों में दर्द होता हो तो मैं क्या कहता हूँ, 'अंबालालभाई, आपके पैरों में बहुत दर्द हो रहा है न? थक गए हो। ऐसे ही पैरों को सिकुड़कर बैठे हैं इसलिए पैरों में दर्द हो रहा है।' फिर बाथरूम में ले जाता हूँ और वहाँ जाकर कंधा थपथपाकर कहता हूँ कि 'मैं आपके साथ हूँ, क्यों डरते हो? हम शुद्धात्मा भगवान हैं न आपके साथ।' इसलिए फिर फर्स्टक्लास हो जाते हैं।

जब कोई मुश्किल आए तब कंधा थपथपाकर कहना। पहले अकेले थे, अब दो (रियल और रिलेटिव अलग) हो गए। पहले तो किसीका सहारा ही नहीं था। अपने आप खुद ही सहारा ढूँढते रहते थे। एक से दो हो गए। ऐसा कभी किया है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : किया है।

दादाश्री : उस समय हमें अलग तरह का अनुभव होता है न? जैसे पूरे ब्रह्मांड के राजा हों न, उस तरह हमें बोलना है। ये सारी मेरे अनुभव की बातें आपको बता दीं।

रीत बदलो, वेदन की !

अब आप रीत (तरीका) बदलो तो वेदना कम होगी और त्यों-त्यों अंदर से ज़्यादा सुख आएगा। क्योंकि, बाहर उलझन हो तो अंदर के सुख का आना कम हो जाता है। आपको 'चंदूभाई' को आईने के सामने ले जाना है, हाथ फेरकर कहना है, 'हम हैं और आप हो। दो हैं, ये तो पक्का है न? उसमें शक नहीं है न?'

प्रश्नकर्ता : नहीं। दो ही हैं।

दादाश्री : ये 'पड़ोसी' कुछ जानते नहीं हैं, ये बात भी पक्की है न? और हम जाननेवाले हैं। पड़ोसी को कुछ भी पता नहीं है कि सिर दर्द हो रहा है। पता हमें है। इसलिए हमें कहना है कि, 'सिर दर्द हो रहा है वो हम जानते हैं। अभी कम हो जाएगा। शांति रखिए।' फिर कंधा थपथपाना है। पड़ोसी को तो हमें सँभालना ही चाहिए न? और पूरनपोली अच्छी हो, चोखे घी की हो, तो दो खिला भी देना! 'खाकर सो जाइए' कहना है। एक के गुनाह की सज़ा दूसरे को किसलिए?

व्यवस्थित कहने के बाद भय कैसा?

प्रश्नकर्ता : अभी भी वेदना का भय लगा रहता है।

दादाश्री : वेदना होनेवाली ही नहीं है तो फिर वेदना का भय कहाँ से होगा? वेदना तो उसे होती है कि जिसे भय लगे! जिसे भय नहीं है उसे कैसी वेदना? ये तो आपका 'वैश्यमाल' (वैश्य-ज्ञातीवाली प्रकृति) भरा हुआ है न? वो एकदम नरम होता है।

सेब खाएँ और अमरूद खाएँ, तो उन दोनों में फ़र्क नहीं है क्या? अमरूद ज़रा सख्त होता है और सेब नरम लगता है, इसलिए आपको 'चंदूभाई' से कहना है कि 'दादा' ने कहा है, 'व्यवस्थित'। 'व्यवस्थित' कहने के बाद भय कैसा?

पुद्गल (जो पूरण और गलन होता है) भय वे पौद्गलिक भूत हैं। उनसे हमें डरना नहीं है। उन्हें पौद्गलिक भूत कहा। 'हमें' 'चंदूभाई' से कहना है, 'यों वैश्य की भाँति करोगे, ऐसा नहीं चलेगा। क्षत्रिय बनो। अभी और दूसरे दुःखों को आना हो तो आ जाएँ। पैर दर्द करो, सिर दर्द करो'। वो पुद्गल है, हम आत्मा अलग हैं!

आपको कुछ भी होनेवाला नहीं है।

ये (आपका) 'वैश्य माल', इसलिए दुःखों के आने से पहले ही डर जाता है। हमें तो चंदूभाई से कहना है कि, 'आपको कुछ भी होनेवाला नहीं है।' भीतर ऐसा विचार आएगा कि 'वो भाईसाहब अब चल नहीं सकते, तो मुझे भी ऐसा हो जाएगा तो?' ऐसे विचार आएँ तो हमें कहना है, 'चंदूभाई, हम बैठे हैं न! कुछ भी होनेवाला नहीं है।' 'हमें' जुदापन के व्यवहार से बोलना है। ये तो साइन्स है। 'मुझे हुआ' कहा कि भूत लिपट जाएगा। तभी तो जगत् के लोगों को भूत लिपट गए हैं!

खुद परमात्मा है फिर किसलिए ये सब? परमात्मपन की थोड़ी-सी शक्ति आपको दिखाई दी है या नहीं? आपको, 'परमात्मा हो' ऐसा भान, ऐसी शक्ति उत्पन्न हुई है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : तो फिर क्या डर है? जिसे थोड़ी शक्ति उत्पन्न हुई है उसमें सर्व शक्ति है, ये तय हो गया। आपका कोई अपमान करे और भीतर परिणाम बदले नहीं तब लगता है कि 'ओहोहो! इतनी सारी शक्ति!' अभी तो थोड़ी ही निकली है। अभी तो और निकलेगी। धीरे-धीरे अनंत शक्तियों का अनुभव होगा!

ये 'ए.एम.पटेल' भी मनुष्य ही हैं न? क्या वे भी आपके जैसे ही नहीं हैं? मनुष्य को सब कुछ असर करता है। क्या नहीं करता? किन्तु, हम तो दुःख आने से पहले ही आधार दे देते हैं कि, 'हम हैं न फिर

दादावाणी

आपको क्या तकलीफ़ है?’ हम तो पड़ोसी के पड़ोसी को भी कहते हैं कि ‘हम आपके साथ हैं न!’ जहाँ भगवान है वहाँ क्या कमी होगी?

आधार के अवलंबन से खड़े दुःख

आप जुदापन से बोलो तो सही! क्षत्रियों की तरह हिम्मत रखनी है। अब तक आप निराधार थे। शास्त्रकारों ने ‘इसे’ ‘अनाथ’ कहा। और आप अब सनाथ हुए। अब आप ऐसा आधार मत देना कि ‘मुझे हुआ’। ऐसा आधार दोगे तो वो दुःख चला नहीं जाएगा। ‘मुझे सिर दर्द हुआ’ ऐसा आधार आप दो तो वो दुःख चला जाएगा या रहेगा?

प्रश्नकर्ता : रहेगा।

दादाश्री : आधार दो तो रहेगा। पूरा साइन्स ही है। उसका उपयोग करना आया तो काम बन जाएगा। ज़रा-सा चूक गए तो उसका असर होगा, बाकी कोई नुक़सान नहीं होगा किन्तु आपको उसका असर भुगतना पड़ेगा।

जगत् खड़ा तन्मयकार होने से

मनुष्य सत्तर वर्ष की उम्र में मरता है, किन्तु उससे पहले ‘मर गया, मर गया’ ऐसे यों ही चिल्लाता रहता है और भय से त्रस्त होता है। यों, भय लगने जैसा जगत् है ही नहीं। मन तो हमें भी दिखाता है कि ‘आगे ऐक्सिडन्ट होगा तो?’ तो हम कहते हैं कि ‘तुमने जो कहा, उसे हमने नोट किया।’ फिर वो दूसरी बात करने लगता है। मन को ऐसा नहीं है कि पहली बात को पकड़कर रखे। मन के साथ तन्मयाकार नहीं होना है। तन्मयाकार होने से ही तो जगत् खड़ा (उत्पन्न) हुआ है। मन के सारे ‘डिस्चार्ज’ भाव हैं। उन ‘डिस्चार्ज’ भाव में यदि ‘हम’ कभी तन्मयाकार हो जाएँ तो ‘चार्ज’ भाव उत्पन्न होते हैं। हमें ‘एलिवेशन’ या ‘डिप्रेसन’ (उन्नतता या अवनतता) अपने सिर पर नहीं लेना है। कुछ भी नहीं होनेवाला है, कुछ बिगड़नेवाला भी नहीं है।

मैं क्षण भर के लिए भी संसार में नहीं रहता, फिर भी कुछ बिगड़ता नहीं है।

प्रश्नकर्ता : मतलब भय नहीं रखना है?

दादाश्री : भय होता ही नहीं ‘हमें’! ‘हम शुद्धात्मा’, इसलिए ‘हमें’ कोई देख सके ऐसा नहीं है, नुक़सान कर सके ऐसा नहीं है, मार सके ऐसा नहीं है, कोई हमारा नाम भी नहीं दे सकता! ये तो खुद के भय से जगत् खड़ा हुआ है। किसी की भी बीच में दखल नहीं है। और ‘चंदूभाई’ ज़रा ढीले पड़ गए हों तो ‘हमें’ उनको आईने के सामने खड़ा करके कंधा थपथपाकर कहना है कि, “हम हैं न आपके साथ! पहले तो अकेले थे, इसलिए घबराते थे। किसी से कुछ कह भी नहीं सकते थे। लेकिन अब तो साथ में ही हैं। घबराते क्यों हो? हम ‘भगवान’ हैं और आप ‘चंदूभाई’ हो। इसलिए घबराना मत।” यदि चंदूभाई ज्यादा ‘एलिवेट’ होते हों तो उनसे कहना है, ‘हमारी सत्ता के कारण आपका इतना रौब है।’ अर्थात् हमें ‘होम डिपार्टमेन्ट’ (आत्मा) में बैठे-बैठे ‘फ़ॉरिन’ (अनात्म विभाग) का काम करते रहना है। यह निर्लेप ‘ज्ञान’ है, कुछ (संसार का) भी छूए नहीं ऐसा है!

‘चंदूभाई’ शोर मचाएँ तब ‘आपको’ ‘चंदूभाई’ से कहना है, ‘इसमें आपका क्या फ़ायदा हुआ? हमारे साथ एकाकार हो जाओ न! उसमें बहुत सुख है! असीम!’ ‘इनको’ जुदाई है इसलिए हमें कहना पड़ता है।

स्थिरता प्राप्त होती है, ज्ञान से

प्रश्नकर्ता : ये संयोग आया, फिर दूसरा आया, तीसरा आया, उसका पूरा प्रवाह ही है न! ये चलते ही रहते हैं न?

दादाश्री : हाँ, मान लो दाढ़ में दर्द होना शुरू हुआ, चैन नहीं पड़ता हो, तब कहेगा, ‘दस दिनों तक भी ये दर्द बंद नहीं हुआ तो क्या करूँगा?’ अरे मुआ, वो संयोग बंद हुए बिना रहेगा ही नहीं! ये दुःखवाला संयोग आया, वो जाए बिना नहीं रहता। मन में ऐसा

होता है कि 'फिर से दर्द होगा तो?' किन्तु थोड़ी देर में ही दर्द बंद हो जाता है। और तुम ऐसा भय मत रखना कि दस दिनों तक दर्द रहेगा तो क्या होगा? क्या वो रुकने के लिए आएगा? कोई रुकने के लिए आता है क्या? आपकी ज़िन्दगी में कभी आपको ऐसा अनुभव हुआ है! रुकने आएँ हों ऐसा अनुभव हुआ है? सबकुछ अपने आप ही चला जाता है न! उसे कुछ कहना पड़ता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं। तो तब वहाँ समभाव रखना है!

दादाश्री : स्थिरता रखनी है। ज्ञान स्थिरता देता है, इस दुष्काल में सामान्य मनुष्य को तो स्थिरता नहीं रहती, ये स्वाभाविक है। इसलिए मन में वरीज़ (चिंता) रखनी ही नहीं है, चाहे जितने संयोग आ मिलें। वे एक के बाद एक चले जाएँगे, सारे संयोग कब चले जाएँ कह नहीं सकते, आप ज्ञान में स्थिरता पकड़ो और ज्ञान हमेशा स्थिर ही होता है।

शुद्धात्मा में बैठकर देखते रहना है

अब बड़ा तूफान आए तो डगमगा नहीं जाओगे न?

प्रश्नकर्ता : ज़रा भी नहीं!

दादाश्री : अपने पास शुद्धात्मा का स्ट्रोंग रूम (मज़बूत कमरा) है, कोई नाम ही नहीं लें ऐसा स्ट्रोंग रूम है यह। खुद के होम डिपार्टमेंट में घुस जाना है, ये तो सारा फ़ारिन है। फ़ारिन में भले ही शोर मचाते हों, हम होम के स्ट्रोंग रूम में घुस गए तो फिर कोई हमारा नाम लेनेवाला ही नहीं है। अब अनुभव आएगा न! पहले होम में बैठें उसके बाद ही अनुभव की शुरुआत होगी न! तब तक तो फ़ारिन में ही चले जाते हैं। शुद्धात्मा होने के बाद भी अभी अंदर नहीं जाते, बाहर चले जाते हो। क्योंकि, अंदर जाने का अभ्यास नहीं है। अभ्यास किया नहीं है न? यानी पहले थोड़ा अभ्यास करना चाहिए न?

अभी तो भीतर तरह-तरह के तूफान आएँ तो वहाँ भी स्थिरतापूर्वक हल लाना है। तूफान कौन-कौन से आएँगे? पूर्वकर्म के। मतलब, भरा हुआ माल है। पूरण (चार्ज होना) हुआ है उसका गलन (डिस्चार्ज होना) होते समय तूफान आते हैं। उस समय हमें स्थिरता रखनी चाहिए, कि ये तूफान आया है। हम शुद्धात्मा, हमें होम डिपार्टमेंट में बैठकर देखते रहना है।

हमें चंदूभाई के साथ बातें करनी है

प्रश्नकर्ता : टेन्शन (तनाव) का अनुभव होता हो, वेदना का अनुभव होता हो तो?

दादाश्री : (अब आपको) वेदना का अनुभव नहीं होता है, उस अनुभव को 'देखना' है कि 'ओहोहो, चंदूभाई! बहुत टेन्शन का अनुभव हो रहा है? हम हैं न आपके साथ। कोई बात नहीं, थोड़ी-सी चाय पी लो।' इस प्रकार हमें बातें करनी है।

प्रश्नकर्ता : इस तरह चंदूभाई के साथ बातें करना उसे उपयोग में रहे कहते हैं न?

दादाश्री : यही अंतिम उपयोग! चंदूभाई को 'देखते' ही रहना है। चंदूभाई का टेन्शन कितना बढ़ा-घटा, वो सबकुछ 'देखते' रहो। फिर आपको (उनसे) कहना है, 'हम हैं आपके साथ, घबराना मत।' बस, इतना ही करना है। यही उपयोग रखना है। चाहे कोई भी टेन्शन आए, किन्तु चंदूभाई को आता है न! आपको कहाँ आता है ? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : बराबर है।

दादाश्री : उदाहरण के तौर पर, कोई इन्कमटैक्सवाला आया। मतलब, आपका हिसाब है तभी तो वो शोर मचाता है न! किन्तु अब, वह आया तो आपको क्या? चंदूभाई को झंझट!

ये ज्ञान मिलने के बाद भी कई लोग ऐसा कहते हैं कि, 'मेरे हार्ट (दिल) में घबराहट होती है।' अनंत जन्मों से दृढ़ हो गया है, इसलिए ऐसा बोलते हैं। ये

दादावाणी

जो भूलचूक होती है न उसका कारण क्या है, कि उसके पास गृहित मिथ्यात्व है। मतलब, लोगों ने कहा कि 'आप चंदूभाई हो। आपकी शादी करवाई, आप पास हो गए हो।' लोगों ने जो कहा, उसे हमने सँभालकर रख लिया (उसे हमने अपना लिया)। अब वो हिसाब निकल रहा है। हमें तुरन्त कह देना है कि, 'मैं चंदूलाल को पहचानता हूँ, भाई।' 'पहचानता हूँ' ऐसा कहें, तो चंदूलाल समझ जाते हैं। 'ये कौन है?' यों भीतर स्पष्टरूप से विभाजन हो जाना चाहिए।

आत्मा होने के बाद तुम्हें हार्ट में कैसे घबराहट होगी? तुम्हें क्यों होगी? होगी तो उसे (चंदूभाई को) होगी! पड़ोसी को होगी। किन्तु ऐसी प्रेक्टिस करनी पड़ती है कि 'आओ चंदूलाल, जाओ चंदूलाल' यों बातचीत करनी पड़ती है। बगीचे में बैठे हों तो भी ऐसे बातचीत करना। 'चंदूलाल आपको चाय पीनी है?' यों बातें करना। कोई सुनेगा तो कहेगा कि पागल है क्या? कोई सुने इस तरह नहीं बोलना है। हमें लोगों से दूर बैठना है। यों बातचीत करोगे तो इसका अभ्यास होगा।

इतना भय किसलिए?

मुझे खुद को ऐसा लगता था कि लोग डरे हुए घोड़े की तरह क्यों हो गए हैं! किसीके पास कोई मिलिक्रयत नहीं है, फिर भी डरे हुए घोड़े जैसी स्थिति है कि 'ऐसा हो जाएगा और वैसा हो जाएगा, इन्कमटैक्सवाला आ जाएगा और फलाँ आ जाएगा।' वह आकर क्या कर लेनेवाला है? किसलिए इतना डरते हो? 'ये दिवार गिर जाएगी तो क्या होगा?' ये दिवार गिरनेवाली होगी और आपकी ऊँगली का कुचलना तय होगा तो कुचल जाएगी, पूरे हाथ का कुचल जाना तय होगा तो पूरा हाथ कुचल जाएगा। हमें जानना है कि 'क्या कुचल गया और कितना कुचल गया!' और क्या करना है? जो कुचल जाएगा उसे हम जानेंगे। जितना हिसाब होगा, उतना ये दिवार कुचल डालेगी। वर्ना, दिवार में ऐसी शक्ति नहीं है

कि हमें छू सके! 'ये गिरेगा, फलाँ गिरेगा, ये स्लेब गिरेगा', अरे ऐसे ही कभी कुछ गिरा नहीं है।

मैं भी डरता था। फिर मैंने छान-बीन की, कि कुछ भी गिरा ही नहीं है। फिर मैंने अंबालालभाई से कहा, भीतर भगवान से नहीं, 'कभी भी कुछ गिरा ही नहीं है, बिना मतलब किसलिए डरते रहते हो? अब तक डरते रहे तो कभी कुछ गिरा है?' तब कहे कि, 'नहीं, कुछ गिरा तो नहीं है।' फिर मैंने कहा, कुछ भी गिरनेवाला नहीं है, आप खुद ही भगवान हो। बिना मतलब कि ऐसा होगा या वैसा होगा, ये सब किसलिए करना? आपको बेटें- बेटियाँ भी नहीं हैं, तो फिर किसलिए इतनी हाय हाय (चिंता) करते हो? यदि बेटे-बेटियाँ होते तो आपकी क्या हालत होती? आपको ना ही पैसे चाहिए, ना ही घर चाहिए, न तो खुद के लिए गाड़ी-मोटर चाहिए, तो फिर इन्कमटैक्सवाले के छापे पड़ेंगे या फलाँ होगा, ऐसे क्यों डरते रहते हो? अगर गिरेगी तो ये दिवार गिरेगी, दूसरा क्या होनेवाला है? अब से ऐसा भय मत रखना कि 'ये गिरनेवाला है'। डरने की ज़रूरत ही क्या है?

कर लें हिसाब चोखे

प्रश्नकर्ता : भुगतना नहीं पड़े, उसके लिए क्या उपाय है?

दादाश्री : मोक्ष में चले जाना। किसीको किंचित् मात्र दुःख नहीं दें, कोई दुःख दे तो हम जमा कर लें, तो हमारे बहीखाते चोखे हो जाएँगे। किसीको दुःख नहीं दें, नया व्यापार शुरू नहीं करें और पुराना जो हो उसको बंद कर दें, तो हिसाब चुकते हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : जिसे चोट लगी, उसका क्या गुनाह है?

दादाश्री : उसका गुनाह, उसका पहले का हिसाब, वो आज चोखा हो गया। हिसाब के बिना, किसीको कोई भी दुःख नहीं आता। हिसाब चोखे नहीं हुए हों तब दुःख आता है। ये उसका हिसाब आया,

इसलिए पकड़ में आया। वर्ना, पूरी दुनिया में इतने सारे लोग हैं, वे क्यों पकड़ में नहीं आए!

प्रश्नकर्ता : तो फिर, जिसका पैर टूटा तो भुगतनेवाले को ऐसा मानना है कि मेरी भूल है, मतलब उसे उस स्कूटरवाले के विरुद्ध कुछ करना ही नहीं चाहिए?

दादाश्री : कुछ करना नहीं चाहिए, ऐसा नहीं। हम क्या कहते हैं कि मानसिक परिणाम बदलने नहीं चाहिए। व्यावहारिक तौर पर जो होता हो वो होने दो, किन्तु मानसिक राग-द्वेष नहीं होने चाहिए। 'मेरी भूल है' ऐसा जिसे समझ में आ गया, उसे राग-द्वेष नहीं होते।

देखना कि किसीको दुःख नहीं हो

प्रश्नकर्ता : बहुत दर्द हो तब तो पुद्गल उछलने लगता है।

दादाश्री : हाँ, आप उछलते हो, इसलिए सबको पता चल जाता है। किन्तु किसीको को दुःख नहीं हो ये देखना है। और शायद कभी किसीको दुःख हो जाए, आपने ऐसा कुछ कहा और सामनेवाले को दुःख लगा तो आपको 'चंदूभाई' से कहना है कि आप प्रतिक्रमण करो।

हम तो पटेल से कहते हैं, 'पैरों में बहुत दर्द हो रहा है, है न? कोई बात नहीं, आज की रात ही है न, फिर ठीक हो जाएगा। किन्तु हम तो आपके साथ हैं न।' ऐसा कहकर कंधा थपथपाना है। जैसे कुछ हुआ ही न हो। फिर दर्द भी मिट जाता है। क्योंकि दिन तो निकालना पड़ेगा न? पत्नी के साथ झगड़ा करने से थोड़े ही दिन फिरनेवाले हैं!

तू रोना मत, हँस, आनंद प्राप्त कर

महावीर भगवान ने अपने शिष्यों को सिखाया कि आप बाहर जा रहे हैं और लोग एकाध लकड़ी मारे, तो हमें ऐसा समझना है कि सिर्फ लकड़ी ही

मारी है न, हाथ तो नहीं तोड़ा! उतनी तो बचत हुई! मतलब इसे ही लाभ मान लेना। कोई एक हाथ तोड़ डाले तो, दूसरा तो नहीं तोड़ा न! दोनों हाथ काट डाले, तो कहना, पैर तो हैं न! दोनों हाथों को और दोनों पैरों को काट दे, तो कहना, जीवित तो हूँ न! आँखों से तो दिखाई दे रहा है न! भगवान ने लाभा-लाभ दिखाया। तू रोना मत, हँस, आनंद प्राप्त कर। बात गलत नहीं है न?

भगवान ने सम्यक दृष्टि से देखा, इसलिए नुकसान में भी लाभ दिखता है।

मेरे जैसा सुखिया नहीं है कोई

और फिर हम तो ज्ञानीओं की रीत सीख गए थे, तीर्थंकरों की रीत सीख गए कि जिसमें दुःख को सुख माना होता है। इसलिए जब दाढ़ दर्द करती हो तो हम समझ जाते हैं कि आज सुख है, अच्छा हुआ! क्योंकि साइकोलोजिकल इफेक्ट ऐसी है कि आत्मा जैसा कल्पे वैसा हो जाता है। मुझे दर्द हुआ कहा, कि वैसा अनुभव शुरू हो जाता है। आप इतना कहो कि चंदूभाई को दर्द होता है, तो तकलीफ़ नहीं होती! और दुःख होता हो तब ऐसा कहें कि मेरे जैसा सुखिया कोई नहीं है, तो वैसा भी हो जाता है, किन्तु भाव टूटे नहीं तो ही! लेकिन थोड़ी देर के बाद भाव तोड़ देता है।

हम आत्मा के तौर पर कहें, कि देह भले ही बीमार पड़े! आत्मा तो हमेशा वैसे का वैसा ही रहता है और हम आत्मारूप हो गए हैं। एक बार आत्मारूप होने के बाद, निरंतर लक्ष्य रहता है। कितने ही पाप धुल जाएँ तब ये वस्तु निरंतर रहती है! बहुत सारे पाप खत्म हो गए हैं। भाप के रूप में थे वे खत्म हो गए, पानी के रूप में थे वे भी खत्म हो गए। बर्फ़ के रूप में जो हैं, वे खत्म नहीं होते। सिर्फ़ जो बर्फ़ के रूप में हैं, वे बाकी रहे हैं, जो चिकणे (गाढ़) हैं। मतलब, उनको भुगते बिना चारा ही नहीं है। वे तो मुझे भी भुगतने पड़ते हैं, चारा ही नहीं है!

गोदे मारनेवाला महान उपकारी

एक भाई तो कहने लगे, 'मुझे गोदे (मुक्के) लग रहे हों ऐसा अनुभव हो रहा है! आप ऐसा कोई उपाय करो कि जिससे मैं ठीक हो जाऊँ।' मैंने कहा, 'यों गोदे मारनेवाला (अर्थात् प्रतिकूल संजोग खड़े करनेवाला) मिलेगा नहीं।' ये मारनेवाला क्या कहता है? 'मोक्ष में जाओ! यहाँ किसलिए सोए पड़े हो?' ये तो बहुत अच्छा है। इसलिए गोदे मारनेवाले का तो उपकार मानना चाहिए। यहाँ (मेरे पास) ठीक करवाने मत आना। दवाईवाले के पास दवाई लेने भी मत जाना। अरे! मारनेवाला कहाँ से मिलेगा? महान भाग्यशाली को मारनेवाला मिलता है!

प्रश्नकर्ता : वह उपकारी कहलाता है।

दादाश्री : हाँ, वर्ना भाग्यशाली का तो हार्ट फ़ेल हो जाता है, पर गोदे मारनेवाला नहीं मिलता! मारनेवाला तो, जो मोक्ष में जानेवाले होते हैं न, उन्हें मारा करता है। घर में पत्नी भी मार (गोदे) मारती है!

देखो न, इन भाईसाहब को लोग कितने गोदे मारते हैं! छः-सात सालों से उन्हें गोदे मार रहे हैं। तभी ये भाईसाहब दो-तीन सालों से कहते हैं, 'अब तो मोक्ष में ही जाना है, अब और कहीं नहीं जाना।' ये तय हो गया अब। क्योंकि रोज़-रोज़ कोई मारे, तो क्या फिर मोह रहेगा? मोह रहता है?

प्रश्नकर्ता : फिर मोह नहीं रहता।

दादाश्री : जहाँ-तहाँ से मारते हैं। अब अगर मारने पर दवाई करें, तो फिर मोह रह जाता है। मारने के लिए तो लोगों को ज़बरदस्ती भाड़े पर रखना पड़ता था। किन्तु भाड़े पर रखे हुए लोग तो ठीक से मारते नहीं हैं न! आपको भी ऐसे मारनेवाले मिले तो होंगे न? सभी के घर में, यों मारनेवाले होते ही हैं। ये शब्द समझने जैसा नहीं है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, बहुत अच्छी बात है।

अशांता तो है सुखदायी

दादाश्री : जो हमें दुखदायी लगता है, वो सुखदायी हो गया। ओहोहो ऐसा था! इस सुखदायी को हम दुःखदायी मानते थे, वह भूल थी। ये भूल मिट जाए, उसका काम बन जाए। हम तो पूरी ज़िन्दगी इसी तरह रहे हैं। मार पर दवाई नहीं की थी। हमें तो कोई गोदा नहीं मारे न, तो हम वैसे संजोग खड़े कर देते। इसलिए तो यह बहन कहती हैं 'दादाजी, रात को आप ओढ़ी हुई चद्दर को क्यों हटा देते हो?' तब मैंने कहा, 'ओढ़ लें तो फिर नींद आ जाती है। ठंड लगती रहे न, तो फिर जागृति रहती है।' यों, गोदा मारनेवाला होना चाहिए। वो पूरी रात गोदा मारता रहे और हम कहें कि, 'तू है और मैं हूँ।' कब नहीं सोया? अनंत जन्मों से सो ही गया था न! और क्या किया है?

प्रश्नकर्ता : शांताशीलिया हो (जिसे सुख पसंद हो) वो तो दवाई करेगा।

दादाश्री : आप ये चिपकाकर यहाँ आए थे, तब मैंने कहा, 'ये कैसा टिकट चिपकाया है?'

प्रश्नकर्ता : मैंने दादाजी से कहा कि, 'मुझे चोट लगी थी इसलिए घाव पर मक्खियाँ बहुत भिनभिना रहीं थीं, इसलिए मैंने ये पट्टी चिपकाई है।' तब फिर आपने कहा कि, 'आपने तो उपाय ढूँढ़ निकाला!'

दादाश्री : लोग कहते हैं कि, 'दादाजी, मैं आपको खाँसी की दवाई देता हूँ।' मैंने कहा, 'अरे, मैं खाँसी आए ऐसा करता हूँ और इस पर फिर आप दवाई से ठीक करने की बात करते हो! फिर आप तो खाँसी से राहत मिल जाए ऐसी दवाई देने की बात करते हो।' खाँसी आती रहे, तो फिर काम बन जाए न। गोदा मार रहा है, ऐसा पता चलता है न! अब यदि उसकी दवाई पी लें, तो गोदा मारनेवाला बंद हो जाएगा इस काल में गोदा मारनेवाला होना चाहिए। मैंने आपके हाथ में मोक्ष दे दिया है। अब अगर गोदा

दादावाणी

मारनेवाला हों, तो फिर गाड़ी ठीक से चलेगी। आपको भी ऐसे गोदे मारनेवाले बहुत मिले हैं, हैं न? बड़े लोगों को बड़े आते हैं और छोटे लोगों को छोटे आते हैं। अपमान पसंद है?

प्रश्नकर्ता : कोई अपमान करे तो जागृति ज्यादा रहती है।

दादाश्री : मन्नत मानो (भीतर ऐसा भाव रखो) तो लोग अपमान करेंगे, लड़ने की शुरूआत करेंगे। कोई अपमान करनेवाला मिलता नहीं है, है न? इसलिए एक भाईसाहब कह रहे थे, 'पूरी रात कोई गोदा मार रहा हो, ऐसा अनुभव हो रहा है। इसलिए आप मुझे विधि कर दीजिए न!' मैंने कहा, 'गोदा मारे तब तो बहुत अच्छा, मुआ तेरा पुण्य जागा है।' मारनेवाला क्या कहता है? मोक्ष में जाओ! तो फिर वो मारनेवाला तो अच्छा है न?

प्रश्नकर्ता : शाता (सुख-परिणाम) मीठी लगती है और अशाता (दुःख-परिणाम) अच्छी नहीं लगती।

दादाश्री : वो तो 'चंदूभाई' को लगती है न? 'हमें' 'चंदूभाई' से कहना है कि अब आप डिक्शनरी (शब्दकोष) बदल दो। अशाता सुखदायी और शाता दुःखदायी। सुख-दुःख तो सब कल्पित हैं। मेरा ये एक शब्द प्रयोग करके देखना, उपयोग करके देखना। फिर यदि आपको ज़रा-सा भी असर हो, तो फिर मुझसे कहना।

वो तप है, वो दुःख नहीं है

प्रश्नकर्ता : लेकिन दुःख लगे, तो उस दुःख को किस तरह लेना है?

दादाश्री : वो तप है, वो दुःख नहीं है! अब आपको दुःख तो आता ही नहीं, तप ही आता है। और तप तो आना ही चाहिए न! और इसे आंतरिक तप कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : ऐसा तप तो बहुत आता है।

दादाश्री : वो जितना ज्यादा आए न, उतना चोखा होने लगा, ऐसा समझना चाहिए। इसलिए आने दो। हमें उनसे कहना है, कि अभी तो आप कम मात्रा में आते हो, सारे दुःख आ जाओ, ऐसा कहना है!

प्रश्नकर्ता : बुलाते हैं.....

दादाश्री : हाँ, बुलाओ, बुलाओ, अब तो दादा मिल गए हैं। 'आना है तो आ जाओ, घबराना नहीं,' कहना है। लोग भले ही घबराए, लेकिन हमें नहीं घबराना है!

आ पड़ा, वह प्राप्त तप

प्रश्नकर्ता : अंतर तप और प्राप्त तप एक ही कहलाता है?

दादाश्री : प्राप्त तप अलग है। प्राप्त तप तो अपने पास अपने आप ही आकर खड़ा रहता है और अंतरतप तो करना पड़ता है। प्राप्त तप मतलब खाना नहीं मिला, खाना खाने के लिए कोई उचित स्थान नहीं मिले, कुछ भी नहीं मिले, उस दिन कहना है कि 'भाई, आज हमारा उपवास,' ये प्राप्त तप। 'आज प्राप्त तप मिला, इसलिए ये तप करो' कहना है। तप मिला।

प्रश्नकर्ता : तो फिर कोई अपमान करे और हम सहन करें, तो उसे भी तप माना जाता है।

दादाश्री : उसे भी प्राप्त तप कहते हैं। आपके लिए तप जल्दी क्यों आया, क्योंकि जल्द ही हल निकलनेवाला है। चोखे हो जानेवाले हो, स्पीडिलि (सपाटे से)। सहन करते समय भीतर तप होता है न! चित्त में दुःख होता है? उसे तप कहते हैं। उस तप को देखते रहना है। उसे दुःख नहीं मानना है। यदि दुःख मानोगे तो उस समय तप उड़ जाएगा।

हमें तप करने हैं, किन्तु जो घर बैठे आ गए

हों वही, उन्हें बुलाने नहीं जाना पड़ता! पुण्यशाली को सारी चीजें घर बैठे ही आ जाती हैं। गाड़ी में कभी कोई सामने से आकर लड़ने लगे, तो हमें समझ जाना चाहिए कि ये तप आया! 'ओहोहो! मुझे दूँदते हुए घर तक आया!' इसलिए तब वहाँ तप करना है।

मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं आपके साथ हूँ

चंदूभाई को बहुत-सी संसारिक मुसीबतें आ गई हों, तब हम 'मैं शुद्धात्मा ही हूँ, आपके साथ हूँ,' ऐसा कहें तो ओलराइट (ठीक) हो जाएगा। संसारिक मुसीबतें आती हैं, हाथ-पैर में बहुत तकलीफ़ हो रही हो तो उस समय, 'भले ही हो, मैं हूँ न, घबराना मत,' ऐसा कहना है। या फिर शरीर में बहुत तकलीफ़ हो रही हो तो 'मेरा नहीं' ऐसा कहें तो अलग रहता है। क्योंकि, लाइन ओफ़ डिमार्केशन (भेदेरेखा) डाल दी है। यह आपका और यह आपका नहीं, इस तरह। इसलिए इसे ज़रा रेग्युलर कोर्स (रोज़ाना व्यवहार) में समझ लेने की ज़रूरत है। मैं जो बोल रहा हूँ, इसे भूलेंगे नहीं न?

आज्ञा का पालन करने से बंध नहीं पड़ता

प्रश्नकर्ता : देह की वेदनीय हो तब चित्त उसमें चला जाता है।

दादाश्री : हाँ। चित्त वहीं पर ही घूमता रहता है। हम उससे कहें कि ज़रा बाहर घूमने जा, तो भी नहीं जाता। घर में ही रहता है।

प्रश्नकर्ता : उससे फिर बंध नहीं पड़ता?

दादाश्री : नहीं, वेदना भुगत लेनी है। भुगतकर ही छुटकारा है। बंध तो, कर्ता बने तब पड़ता है। कर्ता मीट गया तो छूटे कर्म।

प्रश्नकर्ता : आत्मदृष्टि मिलने के बाद, चाहे कैसा भी वर्तन हो लेकिन फिर भी दृष्टि में जुदापन की जागृति रहे, तो क्या वो बंधन है?

दादाश्री : वर्तन किसका है? दृष्टि किसकी है? 'मुझे चिपका, मुझे चिपका' कहे तो चिपक जाता है। वर्ना मुआ, वस्तु अलग हो गई। अब तुम्हें क्या चिपकनेवाला है? आत्मा को निर्लेप जाना, निर्लेप अनुभव किया, फिर उसे क्या चिपकेगा? और चिपक जाए तो फिर तुरन्त प्रज्ञा आपको सावधान करती है। आज्ञा का पालन करें, इसलिए बंध नहीं पड़ता और बंध नहीं पड़ता यानी आत्मा भीतर अलग ही हो गया है।

वह मेरा स्वरूप नहीं

प्रश्नकर्ता : संपूर्ण नीडरता नहीं आती। निर्लेपता नहीं है इसलिए उतनी नीडरता नहीं है। थोड़ी कम है।

दादाश्री : बाहर चाहे सो हो पर भीतर हमें असर नहीं हो, उसे निर्लेपता कहते हैं। क्योंकि हम शुद्धात्मा, शुद्धात्मा को किसी भी प्रकार का असर नहीं होता। क्योंकि वह इफेक्टिव नहीं है। किन्तु जहाँ इफेक्ट हो जाता है न, वहाँ आपकी जागृति ज़रा कच्ची (कमज़ोर) पड़ जाती है। वहाँ पर तब आपको ऐसा करना चाहिए कि 'चंदूभाई, आप किसलिए अपने सिर पर लेते हो, आपको इसमें क्या लेना-देना है!' बस, इतना ही कहना है। तो अलग हो जाता है। उतनी 'जागृति' हमें रखनी चाहिए। या फिर और कुछ नहीं आए तो, 'मेरा स्वरूप नहीं है' ऐसा कहकर छूट जाना है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, ऐसा ज्ञान तो हाज़िर रहता है कि मैं इसमें कहाँ पड़ा (फँसा), ये रिलेटिव है।

दादाश्री : फिर भी हो जाता है। हुआ न, इसलिए रिलेटिव कहने के बजाय, 'मेरा स्वरूप नहीं है' कहकर सब अलग कर देना है। हमने क्या कहा है, कि ये तेरा स्वरूप और यह तेरा नहीं। तो अब आप यों 'मेरा नहीं' कहोगे तो अलग रहेगा। फिर उससे चिपक ही नहीं सकते।

प्रश्नकर्ता : जितनी वस्तुओं में तन्मयता उतना कच्चापन ही है न?

दादावाणी

दादाश्री : हाँ, वही तो! यानी तन्मयता का और कोई कारण नहीं है। सिर्फ जागृति मंद पड़ जाती है। जागृति मंद क्यों हुई? तब कहे, पहले के अभ्यास को लेकर। मतलब हम इसमें थोड़ी ज़्यादा जागृति रखें तो तुरन्त शांत पड़ जाता है, अलग हो जाता है। हमारी तबियत कितनी भी खराब हो और लोग कहें कि दादाजी, आज आपकी तबियत वीक (कमज़ोर) है, तो हम कह सकते हैं 'मुझे कुछ भी नहीं हुआ है,' ऐसा ही कहते हैं। क्या होनेवाला है?

प्रश्नकर्ता : हाँ,

दादाश्री : कितने ही गाँव घूमता हूँ पर कुछ भी नहीं होता। क्या होनेवाला है? हम कहें कि 'मुझे हुआ', यानी चिपका!

असर, मालिकीपन को लेकर

डॉक्टर कहते हैं, 'आपका लीवर बहुत बिगड़ गया है।' मैंने कहा, 'कुछ भी बिगड़ा नहीं है। आराम से रोटी के साथ मक्खन खाता हूँ।' और डॉक्टर तो मक्खन छूते भी नहीं होंगे। अब कहो, कहाँ गया बिगड़ा हुआ लीवर? अमेरिका में कहने लगे, 'ऑपरेशन करना पड़ेगा?' 'अरे मुआ, रहने दे न ऑपरेशन! किसका ऑपरेशन करना चाहते हो? ये तो ज्ञानी पुरुष कहलाते हैं, जो देह के मालिक नहीं हैं।' वहाँ पर भी सीधे नहीं रहते! क्या उनका ऑपरेशन करना होता है? मालिकीवाले का ऑपरेशन किया जाता है। मालिकी नहीं है, उनका क्या ऑपरेशन? मालिकीवाले को नुक़सान होता है या फिर फ़ायदा होता है। हमारे पास नुक़सान-फ़ायदा नहीं होता, सिर्फ दिखावा करते हैं उतना ही, मालिकी नहीं। फिर क्या है?

प्रश्नकर्ता : यहाँ पर क्या अपने आप रीपेर होता है? जिस देह पर मालिकीपन नहीं है, वहाँ पर रीपेरिंग कैसे होता है?

दादाश्री : मालिकीपन के कारण ही घर (देह) बूढ़ा हो जाता है और खोखला हो जाता है। बाकी

अपने स्वभाव से बूढ़ा होना, वो तो जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, वैसे-वैसे होता है, किन्तु मालिकीपन की वजह से देह खराब (बीमार) हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : मालिकीपन के कारण स्पीडि असर होता है?

दादाश्री : नहीं। मालिकीपन के कारण यानी, ऐसा कुदरती जो असर होता है न कि 'ये मुझे हुआ', ऐसा असर हुआ, फिर चिपकता है। 'मुझे नहीं हुआ' ऐसा जो कहते हैं, उन्हें कुछ भी नहीं चिपकता।

हुआ तो वो चंदूभाई को हुआ। उसमें मुझे क्या? 'मैं आपके साथ हूँ', हमें ऐसा कहना है। 'मैं आपके साथ हूँ, चंदूभाई, घबराना मत', कहना। ऐसा भी कहकर देखो। आईने में देखकर कहना, पीछे से कंधा थपथपाना। कोई कंधा थपथपाने नहीं आएगा। पत्नी क्या कहेगी? 'मैं आपको पहले से ही कहती थी न, किन्तु आपमें होशियारी ही नहीं है, इसलिए क्या हो सकता है?' अरे, इस उम्र में मुझ में होशियारी? 'आपमें होशियारी नहीं है!' अर्थात्, संसार तो मूलतः ऐसा ही है। कड़वा है, किन्तु मीठा क्यों लगता है? मोह को लेकर।

दर्द हो, उसे समझो सौतेला

जैसे ही, सौतेला है ऐसा हमने जान लिया, तब से हमारा मन अलग हो जाता है। जब तक हम मामाजी को अपने सगे समझते हैं, तब तक मामाजी के यहाँ खटपट करते रहते हैं। किन्तु एक ही बार माँ कहे कि, 'अरे, मामाजी तो सौतेले हैं, तुम्हारे सगे नहीं हैं', तब से मन अलग हो जाता है। नहीं हो जाता? वैसे ही, सब कुछ सौतेला है।

एक व्यक्ति कहने लगा, 'मेरे इस पैर में बहुत दर्द हो रहा है, उसका मैं क्या करूँ? आप ज़रा हाथ फेर दो न!' मैंने कहा, 'लो, हाथ फेर देता हूँ।' तब कहने लगे, 'दर्द थोड़ा भी कम नहीं हो रहा है।' तब मैंने कहा, तुम्हारा ये पैर तो सौतेला है, तुम्हारा सगा

दादावाणी

नहीं है। तुम सगा मान बैठे हो, किन्तु ये तो सौतेला है। मैंने कहा, पाँच बार इस तरह बोलो। 'ये सौतेला पैर है और ये दूसरा मेरा सगा। ये मेरा सगा और ये मेरा सौतेला', जिसमें दर्द हो वो सौतेला। तुमने ऐसा बोला, तो देखो ठीक हो गया न?

प्रश्नकर्ता : दादाजी, उस दिन मुझे बुखार आया था तब आपने मुझे ये उदाहरण दिया था, मैंने बैठकर पाँच मिनट इस तरह किया तो बुखार उतर गया।

दादाश्री : उतर जाता है, हम कहें कि ये सगा और ये सौतेला, तब से ही सारे भाव टूटने लगते हैं और सब ठीक हो जाता है। इसलिए सौतेला रखना, अब मन का नहीं रहे। इस तरह ज़रा रूबरू दिखाना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : आईने में देखता हूँ, इस तरह।

दादाश्री : ये उपाय ठीक रहेगा या नहीं? दादा जो चाबियाँ देते हैं न, उनसे सारे ताले खुल जाते हैं।

आत्मा के तौर पर मैं हूँ अलग

वो तो तय ही होता है, कि इन भाईसाहब को इतनी अशाता होगी और इतनी ही शाता होनेवाली है, ऐसा डिसाइडेड (निश्चित) होता है। फिर अशाता हुए बिना नहीं रहती। चाहे यों करवट बदलता रहे, किन्तु अशाता होती ही है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, वो तो ज्ञान नहीं लिया हो तब न? आपने ज्ञान दिया उसके बाद तो सब उड़ गया न?

दादाश्री : हाँ, वो तो सब उड़ गया, ये तो यों ही मैं आपको बात बता रहा हूँ।

वो रोता हो, चिढ़ता हो, कुछ भी करता हो, किन्तु यदि आत्मा के तौर पर 'मैं अलग हूँ,' ऐसा भान हो न, तो बस हो गया। 'मैं' 'चंदू' नहीं हूँ।

किसी भी प्रकार से 'मैं' 'चंदू' नहीं हूँ। तब शाता होती है, शाता में तो 'मैं' 'चंदू' हूँ ऐसा ही रहता है लोगों को, किन्तु 'वो' 'चंदू' नहीं है ऐसा यकीन कब आता है? अशाता आए तब। मतलब वास्तव में 'चंदू' नहीं है, ये बात पक्की है।

प्रश्नकर्ता : इसलिए फिर वो वाली (वेदनावाली) स्थिति रहती ही नहीं है!

दादाश्री : फिर झंझट ही नहीं रहती न!

हमें मालिकी छोड़ देनी है

अपना नहीं है उसे अपना मानें वहीं से भूल हो रही है। अपना विज्ञान क्या कहता है कि यहाँ लाइन ऑफ डिमार्केशन पड़ गई। फिर, यह पौधा अपना नहीं। उसे अपना मानें तो दुःख होगा। यह पौधा क्यों सुख गया? अरे भाई, नहीं है अपना, वो तो दूसरे का है।

प्रश्नकर्ता : अब समझ में आया, कि उसे छोड़ ही देना है कि अपना है ही नहीं फिर क्या? उस पर मालिकी रखकर बैठे थे।

दादाश्री : हमें मालिकी छोड़ देनी है। बिना मतलब का बोझ।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपने जब हमें ज्ञान दिया उस समय तो हमने समर्पण कर दिया है, किन्तु चोरी-छिपे हम (मालिकी) वापस ले लेते हैं।

दादाश्री : क्योंकि उल्टा अभ्यास है। डॉक्टर ने कहा हो कि दायें हाथ से खाना मत खाना, आपको जो दर्द हो रहा है वो बढ़ जाएगा, फिर भी खाते समय दायें हाथ से ही खाने लगता है। इसलिए लाइन ऑफ डिमार्केशन डाली है न, यह 'अपना नहीं'। और इतना ध्यान रखना चाहिए कि जो दुःख दे, उल्टा असर करे, वह 'अपना नहीं'। और जो अपना है, वह उल्टा असर नहीं करता। बस, इन दो बातों को समझ लो। आसान है न, बस!

तुम्हें जाना हो तब जाना, मेरी इच्छा नहीं है

आत्मा के अलावा सारी सड़ी हुई वस्तुएँ हैं। सिर्फ आत्मा नहीं सड़ता। उसे कुछ भी नहीं होता ऐसा है। इसलिए हम आत्मस्वरूप हो गए तो काम बन जाएगा। वर्ना, सब व्यर्थ है। आत्मस्वरूप होने की ज़रूरत है, बाकी कुछ नहीं। ये देह कट जाए या चाहे कुछ भी हो जाए, हमें देह स्वरूप नहीं होना है। परक्षेत्र में घुसे तो संसार कड़वे ज़हर जैसा लगता है।

एक क्षण के लिए भी 'यह देह हमारा है' ऐसा हमें याद नहीं है। यह ज्ञान प्रकट होने के बाद देह हमारा नहीं, वह पराई वस्तु है। पराई वस्तु हमारे हाथ नहीं रहती और हमें रखनी भी नहीं है। अपनी वस्तु वो अपनी, पराई वो पराई कहलाती है।

प्रश्नकर्ता : 'देह को जब छूटना हो तब छूटे, हमारी इच्छा नहीं है', ऐसा कहने का आशय क्या है?

दादाश्री : देह के प्रति तिरस्कार उत्पन्न नहीं हो, इसलिए ऐसा कहते हैं कि हमारी इच्छा नहीं है।

प्रश्नकर्ता : इन दोनों वाक्यों को कहनेवाला कौन है?

दादाश्री : वो तो जो खुद मृत्यु से अलग हो, वो ही कहता है न!

प्रश्नकर्ता : उसे प्रतिष्ठित आत्मा कहते हैं?

दादाश्री : नहीं, प्रतिष्ठित आत्मा तो मृत्युवाला है, ये सारा प्रज्ञा का काम है! प्रतिष्ठित आत्मा तो मरनेवाला है, वो तो ऐसा बोलेगा ही नहीं न?

मोक्ष का मार्ग है शूरवीर का

इसलिए क्षत्रिय बन जाओ। जो स्वरूप अपना नहीं है, वहाँ क्या पीड़ा? जो स्वरूप अपना नहीं है ऐसा 'ज्ञानीपुरुष' ने आपसे कहा, वो बुद्धि से आपकी समझ में आया, फिर क्या पीड़ा?

आपका एक ही मकान हो, तो उसे तोड़ना

अच्छा नहीं लगता। किन्तु कर्ज हो गया हो और उसे बेच डाला हो, उसके दस्तावेज भी हो गए हों, फिर वो घर टूटे और आप शोर मचाओ कि 'ये मेरा घर, ये मेरा घर', तो कितना खराब लगता है!

प्रश्नकर्ता : शब्दों में कहने में कोई हर्ज नहीं आता, किन्तु जब वेदनीय आती है तब अपना रंग दिखाती है।

दादाश्री : आपको ऐसी क्या वेदनीय हुई है? वेदनीय तो जब पक्षाघात हो, तब वेदनीय कहलाती है। इसे वेदनीय कैसे कह सकते हैं? पेट में दर्द हुआ, सिर-दर्द हुआ या कहीं भी दर्द हो, उसे वेदनीय कैसे कह सकते हैं? अपने एक महात्मा को पक्षाघात हुआ था, वो कहने लगे कि, "दादाजी, ये 'मंगलदास' को सब देखने आते हैं, उन्हें 'मैं' भी देखता हूँ।"

प्रश्नकर्ता : जब तक आत्मा का स्पष्टवेदन नहीं होता, अनंत स्वरूप का वेदन नहीं होता, तब तक अन्य कोई न कोई वेदन तो होता ही है न? उदाहरण के तौर पर शाता-अशाता।

दादाश्री : वेदना का स्वभाव ऐसा है कि अगर उसे पराई जाने तो जानपन में ही रहता है कि ये पराई है। फिर उसे सिर्फ जाना ही करता है, वेदता नहीं। किन्तु ये वेदना 'मुझे हुई' कहे तो वेदता है और ये 'सहन नहीं होती' ऐसा बोले इसलिए वेदना दस गुनी लगती है। 'सहन नहीं होती', ऐसा तो बोलना ही नहीं चाहिए।

एक पैर टूट रहा हो तो दूसरे पैर से भी कहना है कि तू भी टूट। नादारी ही निकालनी है। अब मोक्षमार्ग हाथ में आया है, इसलिए थोड़ी हिम्मत दिखानी पड़ेगी।

आत्मा, जैसा चिंतन करे वैसा हो जाता है

आत्मा का स्वभाव कैसा है? जैसा चिंतन करे वैसा तुरन्त ही हो जाता है। सुखमय चिंतन किया तो

सुखमय हो जाए और दुःखमय चिंतन किया तो वैसा हो जाए। इसलिए बहुत जागृत रहना है। अन्य कोई चिंतन नहीं कर सकते, जैसे कि 'मेरे सिर में दर्द हुआ!'

प्रश्नकर्ता : चिंतन नहीं होता, किन्तु जब मौसम खराब हो जाता है तब सिर-दर्द होता है।

दादाश्री : मौसम का असर तो होता है, किन्तु हमें ऐसा नहीं बोलना है कि मुझे दर्द हुआ। हमें तो ऐसा कहना चाहिए कि 'चंदूभाई' के सिर में दर्द हो रहा है।

ये विज्ञान है। सिर्फ आत्मा का स्वभाव ही ऐसा है कि जैसा चिंतन करे वैसा हो जाता है। और फिर तुरन्त ही, देर ही नहीं लगती। 'मैं लेफ्टनन्ट हूँ' कहे तो वैसा होता जाता है। 'मैं अज्ञानी हूँ' कहे तो वैसा हो जाता है, 'मैं क्रोधी हूँ' कहे तो वैसा हो जाता है। इसलिए हम उसके पास क्या करवाते हैं? 'मैं शुद्धात्मा हूँ' करवाते हैं, तो वैसा हो जाता है। हमने जो दिखाया, वह वैसा हो जाता है। पाँच वाक्य (आज्ञा) दिए हैं। सारे पाप जो हैं वो इस चंदू के, तुम्हें क्या लेना-देना? मतलब, पराई वस्तु अपने सिर पर लें तो फिर हम उस रूप हो जाते हैं। अभी चंदूलाल कहें, 'साहब, मैं तो बहुत बीमार पड़ गया हूँ, मैं बहुत बीमार हूँ।' तब मैं कहता हूँ कि 'नहीं, तुम ऐसा मत बोलना। हमें तो ऐसा कहना है कि चंदूलाल बीमार हैं।' 'मैं बिमार' कहें तो हम बीमार ही पड़ जाते हैं, उसी घड़ी तुरन्त, बोलते ही। ऐसा हो जाता है या नहीं हो जाता? और 'मैं अनंत शक्तिवाला हूँ' बोलकर देखो, उस घड़ी क्या हो जाते हो? अनंत शक्तिवाले हो जाते हो।

चलना है आपको, हमें देखना है

यों ही मुआ, 'चला नहीं जाता, चला नहीं जाता' ऐसा कहकर कमजोर हो जाता है। आत्मा का स्वभाव, जैसा बोले वैसा हो जाए। कोई कहे कि, 'चला नहीं जाता, पैर तो चल ही नहीं रहे।' फिर पैर समझ जाते हैं कि, 'हमसे कह रहे हैं कि चल नहीं रहे, इसलिए

कोई डाँटनेवाला नहीं है।' हमें कहना है कि, 'चलोगे क्यों नहीं? चलो आगे!' एक-दो उलाहने दें तो अपने आप चलेंगे, क्यों नहीं चलेंगे? करार किया है। करार अभी पूरा नहीं हुआ है। फाइल नं-१ को खिलाएँ-पिलाएँ और चलेगी क्यों नहीं? ये कैसी बात हुई? मसालेदार चाय-पानी पिलाते हैं, घी में तले हुए ब्रेड और सबकुछ खिलाते हैं फिर भी ऐसा कहता है कि 'चला नहीं जाता', तो हमें कहना है 'चल, चलता है या नहीं चलता?' बाघ पीछे पड़ जाए तो चलेगा या नहीं चलेगा? तब फिर, बाघ पीछे पड़े और दौड़ें इसके बजाय ऐसा ही समझ लो न कि बाघ पीछे ही पड़ा हुआ है। संसार बाघ ही है न! संसार बाघ से भी ज्यादा डरावना है। बाघ तो एक बार खा जाता है और संसार तो जन्मों-जन्म खा जाता है।

करार किए हों उसके अनुसार चलना पड़ता है न? उसे (फाइल नं-१ को) चलना है। हमें 'देखते' रहना है। हम हमारी फर्ज अदा नहीं करें, तब कहना। चलना आपको है। हमें 'देखना' है!

ऐसी भाषा रखो अब

प्रश्नकर्ता : आज दादाजी एकदम यंग (जवान) दिख रहे हैं।

दादाश्री : हाँ, रोज सब लोग ऐसा कहते हैं। फिर मैं भी आईने में देखता हूँ, कि कैसे लगते हैं? मुझे भी यंग दिखते हैं। सब लोग कहें इसलिए फिर भीतर असर होता है न। बाकी, 'मैं बूढ़ा हूँ' ऐसा कभी नहीं कहता। क्योंकि मैं तो शुद्धात्मा हूँ, बूढ़े तो ये (चंदूलाल) होते हैं, देह होता है। वो बोलते नहीं। हमारे पूछे बगैर कैसे बोलेंगे? व्यवहार में कहते हैं कि 'हाँ, बूढ़े हैं' किन्तु 'मैं बूढ़ा हूँ' ऐसा नहीं बोलना है। क्योंकि 'मैं तो शुद्धात्मा हूँ।' मतलब हमारे सारे हिसाब अलग प्रकार के होते हैं। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' होकर 'मैं बूढ़ा हूँ' बोलो तो वास्तव में आप वैसे हो जाओगे। आप कहो कि मैं बूढ़ा हो गया, वो आप अपने लिए नहीं बोलते और अंदर से जानते हो कि मैं तो अलग

दादावाणी

हूँ और ये तो चंदूभाई के लिए बोला जा रहा है। इसलिए आपको असर नहीं होता। सबकुछ इफेक्टिव है। इस वर्ल्ड में एक शब्द बोलें, कि इफेक्टिव है!

‘चंदूभाई’ कहे कि मेरी तबियत बिगड़ गई है। तो ‘हमें’ अंदर समझ जाना है कि चंदूभाई की तबियत बिगड़ गई है, मेरी तो बिगड़ी ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादाजी। चंदूभाई के लिए कहना है और ‘तबियत अच्छी है’, ऐसा पॉजिटिव बोलना है हमें।

दादाश्री : मतलब, ‘तबियत अच्छी है’ ऐसा कहो। चंदूभाई कहे कि ‘मेरी तबियत खराब है’। तब हमें कहना है, ‘नहीं, अच्छी है।’ ऐसा कहने से ज्यादा कुछ नहीं होगा, किन्तु उन्हें शांति रहेगी। बाकी आप खुद ही कहो कि मेरी तबियत अच्छी है, तो अच्छी हो जाती है। आप खुद ही कहो कि मेरी तबियत खराब है, तो खराब हो जाती है। अर्थात्, जैसा चिंतन करे वैसा वह हो जाता है। मैं अलग और चंदूभाई अलग। खुद कभी भी एकरूप होना ही नहीं है। चंदूभाई को भूख लगी है, चंदूभाई को खाना है, चंदूभाई ने खाना बनाया, चंदूभाई को समझ में नहीं आता, चंदूभाई को समझ में आता है! ऐसी भाषा रखो।

चंदूभाई को सामने बिठाकर कहना है

अब आपको क्या करना है कि आपको चंदूभाई के साथ, चंदूभाई को बिठाकर बातचीत करनी पड़ेगी कि, ‘आप सड़सठ वर्ष की उम्र में भी रोज़ सत्संग में आते हो, इस बात का बहुत खयाल रखते हो ये बहुत अच्छा काम करते हो।’ किन्तु साथ ही साथ दूसरी समझ भी देनी है और सलाह देनी है कि, ‘देह का ज्यादा ध्यान (खयाल) क्यों रखते हो? देह में ये जो कुछ होता है, तो भले ही हो। आप हमारे साथ इस तरफ़ टेबल पर आ जाओ न! हमारे पास अनंत सुख है’, ऐसा आपको चंदूभाई से कहना है। जैसे कि, चंदूभाई को आईने के सामने

बिठाया हो तो वह आपको ‘एक्जेक्ट’ (अलग) दिखेंगे या नहीं दिखेंगे?

प्रश्नकर्ता : अंदर तो मेरी घंटों बातचीत चलती है।

दादाश्री : किन्तु, अंदर बातचीत करने में दूसरे फोन उठा लेते हैं, इसलिए उन्हें सामने बिठाकर जोर-से बातचीत करनी है, तो कोई दूसरा फोन उठाए ही नहीं!

प्रश्नकर्ता : खुद को सामने कैसे बिठाना है?

दादाश्री : तुम ‘चंदूभाई’ को सामने बिठाकर डाँटते रहो तो ‘चंदूभाई’ बहुत सयाने हो जाएँगे! तुम्हें खुद ही डाँटना है कि ‘चंदूभाई, ऐसा कहीं होता है? ये आपने क्या लगा रखा है? और अब सब सीधा करते जाओ न?’ ऐसा हम कहें तो उसमें क्या गलत है? कोई दूसरा डाँट तो अच्छा लगेगा क्या? इसलिए हम आपसे ‘चंदूभाई’ को डाँटने के लिए कहते हैं, वर्ना तो एकदम ही अंधेर चलता रहेगा। *पुद्गल* क्या कहता है कि आप तो ‘शुद्धात्मा’ हो गए, लेकिन हमारा क्या? वो दावा करता है, वो भी हक़दार है। वो भी इच्छा रखता है कि उसे भी कुछ चाहिए। इसलिए उसे समझा-बुझा लेना है। वो तो भोला है। भोला इसलिए, कि मूरख की संगत मिले तो मूरख बन जाए और सयाने की संगत मिले तो सयाना बन जाए। चोर की संगत मिले तो चोर बन जाए! जैसा संग वैसा रंग! किन्तु वो अपना हक़ छोड़े ऐसा नहीं है।

गो टु दादा (दादा के पास जाइए)

और बहुत दुःख आ पड़े तब आपको कहना है कि, जाओ ‘दादा’ के पास।

प्रश्नकर्ता : किन्तु दादाजी, इस तरह हमारा दुःख आपको दे सकते हैं?

दादाश्री : हाँ, हाँ। दादा को ही सबकुछ दे देना है और कहना है कि, ‘जाओ, दादा के पास।

इधर क्या है? सब दे दिया दादा को। अब इधर क्यों आया?’

प्रश्नकर्ता : सुख भी दे देना है?

दादाश्री : नहीं, सुख नहीं। सुख आपके पास रखना है। मुझे सुख का शौक नहीं है, इसलिए आपके पास ही रखना है। आपसे यदि दुःख सहन नहीं होता हो, तो मेरे पास भेज देना। दो-पाँच बार दुःख का अपमान करो कि ‘इधर क्यों आया है? दादा को दे दिया है’, तो वो ठहरता नहीं है। इस पुद्गल का गुण ऐसा है कि अपमान हो तो वहाँ नहीं ठहरता।

जो ‘दादा भगवान’ हैं, वे अचिंत्य चिंतामणि हैं। मुसीबत में उनका चिंतन करो, तो सारी मुसीबतें चली जाती हैं। जैसा चिंतन करो, वैसा फल देते हैं। फिर हमें डरने की क्या ज़रूरत है?

शुद्धात्मा को छूते नहीं कोई कर्म

प्रश्नकर्ता : कभी निकाचित कर्म का उदय आए, तब ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ ऐसा जप-यज्ञ शुरू करें, तो वो कर्म हल्का हो जाता है?

दादाश्री : हाँ, हल्का हो जाता है! और फिर ‘शुद्धात्मा हूँ’ बोलता रहे, तो खुद की स्थिरता डिगती नहीं, इसलिए हल्का हो जाता है। निकाचित का अर्थ ऐसा है कि ऊपर से भगवान भी उस कर्म को दूर करने आएँ, तो भी वो दूर नहीं होता, ऐसे निकाचित कर्म होते हैं। भुगतकर ही छुटकारा होता है। किन्तु ‘शुद्धात्मा हूँ’, बोलते रहें, तो हमें छूता नहीं। कर्म, कर्म की जगह पर रहता है। पौद्गलिक तौर पर उसका निकाल (निपटारा) हो जाता है। हमें नहीं छूता।

शुद्धात्मा का साम्राज्य हो, वहाँ कुछ इधर-उधर नहीं होता। भीतर कोई असर नहीं होता। बुखार आए, देह छूटने वाला हो, देह रहनेवाला हो, फिर भी भीतर कुछ नहीं होता। कोई दखल ही नहीं। खुद का क्या जानेवाला है? जाएगा तो पड़ोसी का जाएगा!

व्यवस्थित में जो हो, वह भले हो

आप अब निःशंक हो गए। अब आज्ञा में रहो और बुढ़ापा गुज़ार दो। यह देह चला जाए तो भले ही चला जाए। कान काट लें तो भले ही काट लें, पुद्गल तो दे देने का है। पुद्गल पराया है। पराई वस्तु अपने पास रहनेवाली नहीं है। वो तो जब ‘व्यवस्थित’ का टाइम (समय) आएगा, तब चला जाएगा। इसलिए ‘जब लेना हो, तब ले लेना’, ऐसा कहना है। भय नहीं रखना है। कोई लेनेवाला नहीं है। ऐसा कोई बेकार बैठा भी नहीं है कि हम कहें कि, ‘ले लो’, और वो ले लें। कोई लेनेवाला नहीं है। किन्तु इससे अपने में निर्भयता आती है। ‘जो होना है सो हो’, कहना है।

प्रश्नकर्ता : बाहर की फाइलें इतनी ज़्यादा तंग नहीं करतीं, किन्तु अंदर की शाता-अशाता में एकाकार हो जाते हैं।

दादाश्री : शाता-अशाता को तो एक तरफ़ ही रख देना है। शाता में प्रमाद हो जाता है, अजागृति रहती है। शाता-अशाता की ज़्यादा परवाह नहीं करनी है। अशाता आए, हाथ में जलन हो रही हो तो हमें कहना है कि, “हे, हाथ! ‘व्यवस्थित’ में हो तो जल जाओ, वर्ना ठीक रहो।” इससे, जलन हो रही हो वो बंद हो जाती है। क्योंकि, हम जला देने की बात करें तो क्या होगा? कभी भी सहलाना तो है ही नहीं। ये पुद्गल है। ‘व्यवस्थित’ के ताबे में है। उसकी अशाता वेदनीय जितनी आनी हो उतनी आ जाए। शूरवीरता तो होनी चाहिए न? और वैसे भी रो-रोकर भुगतना उसके बजाय हँसकर भुगतने में क्या हर्ज है? इसलिए तो कहा है न, ‘ज्ञानी वेदे धैर्यं थी, अज्ञानी वेदे रोई’।

आधा पैर टूट जाए तो हमें कहें कि, चलो डेढ़ तो बचा है न! फिर और आधा टूट जाए तब हमें ऐसा कहना है कि, दो के बजाय एक तो रहा है न! ऐसा करते-करते सारे पार्टस (अंग) टूट जाएँ, तो अंत में आत्मा तो है न! अंत में तो सारे पार्टस टूट ही

जानेवाले हैं न? पेट्रोल डालकर आग लगाएँ, फिर भी हम आत्मस्वरूप हैं! कभी न कभी तो आग लगने ही वाली है न! नहीं लगनेवाली? थोड़ा अभ्यास ही करने की ज़रूरत है। नंगे पैर साधु महाराज कैसे चल पाते हैं? किसान कैसे चल पाते हैं? दो-चार बार पैर जल जाएँ, फिर सब राह पर आ जाता है। बाकी, एक गोली से वेदना बंद हो जाए, उसे वेदना कैसे कह सकते हैं? सौ-सौ गोलियाँ खाएँ तो भी वेदना कम नहीं हो, उसे वेदना कहते हैं।

आज्ञा का पालन करे, उसे अशाता नहीं छूती

ये ज्ञान ही ज्ञाता-दृष्टा का है। अशाता वेदनीय में निरंतर हाज़िर रहे, ऐसा ये ज्ञान है। पाँच आज्ञा का पालन करे, तो उसके पास अशाता वेदनीय आ ही नहीं सकती। आत्मा प्राप्त होने के बाद, नींद में से जागते ही तुरन्त आत्मा हाज़िर हो जाता है, इसे आत्मा प्राप्त हुआ कहा जाता है। और ऐसा आत्मा प्राप्त होने के बाद कुछ भी बाकी नहीं रहता। इसलिए आपको किसी भी चीज़ से डरना नहीं है। 'लाख गुनी वेदनीय आओ' कहना है। इसके बजाय, वेदनीय आए ही नहीं ऐसा कहते हैं। अशाता वेदनीय में भी समाधि रखे, ऐसा ये ज्ञान है। किन्तु आप पहले से ही ऐसा बोलो कि 'आएगी तो क्या होगा? आएगी तो क्या होगा?' तो फिर वैसा परिणाम आएगा। वर्ना तो कहना है, 'आओ।'

प्रश्नकर्ता : और फिर आनंद उत्पन्न होता है!

दादाश्री : हाँ, आनंद उत्पन्न होता है। और ये तो 'सिर-दर्द हुआ, मेरा सिर बहुत दर्द कर रहा है।' 'अरे, लेकिन तुम्हारा सिर दर्द कर रहा है या चंदूभाई का दर्द कर रहा है? तुम तो शुद्धात्मा हो।' तो कहे कि, 'हाँ, मैं तो शुद्धात्मा, ये तो चंदूभाई को दर्द हो रहा है।' अब देखो, चंदूभाई का सिर दर्द करता हो, तो उसमें 'उसको' दर्द होने लगा। 'मेरे सिर में दर्द हुआ' ऐसा कहे कि मल्टीप्लाय बाय टु (दो गुना)। 'मुझे दर्द हुआ' ऐसा कहे तो मल्टीप्लाय

(गुणा करना) हो जाता है और 'मेरा स्वरूप नहीं है' तो छूट गया।

ये ज्ञान यहाँ फल देता है

ज्ञान नहीं हो ऐसे व्यक्ति को पक्षाघात हुआ हो न, तो शरीर पूरा अकड़ जाता है। दूसरे लोग देखने आएँ और कहें कि, 'अरे! ये अंग खराब हो गया?' तब तो पक्षाघातवाला व्यक्ति रोता रहता है और कहता है, 'ये भी खराब हो गया और वो भी खराब हो गया।' बहुत वेदना होती है।

और अपने ज्ञान लिए हुए किसी व्यक्ति को कभी पक्षाघात हुआ हो, तो उसका हाल पूछने आनेवालों से वह क्या कहता है? "भाई, बाँई तरफ के सारे अंग खराब हो गए। किन्तु आप जिसे देखने आए हो, उसे 'मैं' भी 'देखता' हूँ। मैं भी देखता हूँ और आप भी देखो। हम सब 'देखनेवाले' हैं कि ये किसे हुआ है?" ये ज्ञान यहाँ फल देता है। बहुत अच्छा फल देता है।

फिर भी, अपने ऐसे कोई महात्मा जो ज्ञान में बहुत आगे बढ़ गए हों, उनसे अगर पूछें कि, 'भाई, आपको पक्षाघात पसंद है?' तब कहे, 'नहीं, पसंद तो नहीं है।' किन्तु पक्षाघात हो जाए, तो उसका तिरस्कार भी नहीं करते और नहीं हुआ हो तो वो पक्षाघात को बुलाते भी नहीं। हमें कहना है नहीं आएँ तो अच्छा, क्योंकि ये पीड़ा कौन मोल ले?

खुद अलग, फाइल नं-१ से

अब, 'मेरा है' ऐसा मुँह से तो बोलते हैं, किन्तु अंदर से तो नहीं बोलते न! हृदय से कोई चीज़ मेरी है, ऐसा नहीं है न? ममता भी छूट गई है न? एक घंटे के लिए भी इस देह का मालिकीपन किसीसे नहीं छूटता। देह की बात करें तब कहते हैं, 'देह तो मेरा है न इसलिए दुःख भी मुझे ही होगा न! मुझे चोट लगी है, मुझे दर्द हो रहा है', ऐसा कहता है। साधु आचार्य महाराज भी ऐसा ही बोलते हैं न? इसमें किसीकी नहीं चलती!

क्योंकि जब तक 'मैं हूँ' ऐसा देहाध्यास है, तब तक और कुछ बोल ही नहीं सकते न! और आप (महात्मा) तो कहते हो कि, मेरी फाइल बिगड़ी है, फाइल नं-१। यह कोई कम ज्ञान नहीं है, ऐसा वैसा ज्ञान नहीं है। यह ज्ञान इतना सरल और आसान है!

अब तो अपना कुछ नहीं। 'ज्ञानीपुरुष' को सब समर्पित कर दिया। मन-वचन-काया और सर्व माया, भावकर्म-द्रव्यकर्म-नोकर्म सबकुछ समर्पित कर दिया। फिर आपके पास कुछ भी बाकी नहीं रहता।

वेदन नहीं करना है, जानना है

प्रश्नकर्ता : दादाजी, ये ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अंतराय, इनका चिंतन कर-करके उन्हें जल्दी खत्म कर सकते हैं न? जब कि शाता-अशाता वेदनीय और नाम-गोत्र-आयुष्य इन सबका तो भुगतकर ही छुटकारा है न?

दादाश्री : भुगतकर ही छुटकारा है ऐसा नहीं, इसमें भी यदि ज्ञान में मजबूत हों न, तो भुगतते नहीं है। तीर्थंकर कभी भी नहीं भुगतते। उनको शाता-अशाता वेदनीय होते हैं, वे भुगतते नहीं, वे जानते हैं, इतना ही।

किन्तु यह ज्ञान कैसा है? आप कहते हो कि, 'उसका (सामनेवाला का) कोई दोष नहीं है।' क्योंकि, इसे आपने जाना (आपने समझा)। किन्तु अगर आप कहो, 'मुझसे ये सहन नहीं होता' तो दुःख आया। कितने ही छोटे-मोटे दुःख तो आप जानकर (समझकर या अलग रहकर) ही जाने देते हो, उसके भोक्ता बनते ही नहीं हो। और जितने दुःख के लिए आप कहो कि, 'मुझे ये दुःख आया है', तो अपने आप ही, आपके बोलते ही दुःख आया। आप कहो कि 'मैंने जाना', 'जाना' कहते ही हल्का हो जाता है। फिर सिर्फ 'जाना' ही करता है।

ये विज्ञान तो ऐसा है कि अँगूठा काट डाला तो भी भीतर छूता नहीं (असर नहीं करता)। किन्तु इस काल में इतना ज्यादा स्थिर रह सके ऐसा नहीं है, काल

विचित्र है न! बाकी, जाननेवाला तो निरंतर जानता ही रहता है, वेदता नहीं (वेदन नहीं करता)। वेदक वेदन करता है कि 'मुझे ऐसा हुआ', ऐसा होते ही तुरन्त वेदन किया।

प्रश्नकर्ता : तो फिर, उस वेदक का निकाल कैसे लाना है?

दादाश्री : वेदकर। वेदकर ही निकाल होनेवाला है। इस काल में ये ज्ञान पूरी तरह अनुभव में रहे ऐसा नहीं है न! वो तो ज्ञानी को रहता है। बाकी दूसरों को, हर-एक को रहता नहीं है न! उसे तो वेदकर ही छुटकारा है। किन्तु उसके लिए ऐसे थोड़े उपाय करने हैं कि 'मेरा नहीं है।' इस प्रकार थोड़े ज्ञान के उपाय करें, इसलिए फिर थोड़ा कम हो जाता है!

जो व्यथित हो, वह मैं नहीं

दर्द हो रहा हो तो हमें पता चलता है इसलिए कहना है। हमें वेदना महसूस भी होती है। जितने इसमें पहले के भाव हैं न, वे कर्म के उदयभाव हैं। उतनी वेदना हमें महसूस होगी, किन्तु जैसे-जैसे भाव छूटते जाएँगे वैसे-वैसे वेदना महसूस भी नहीं होगी। फिर सिर्फ जाने, उतना ही। अभी तो भले ही वेदे, दोनों होता है। किन्तु 'मैं चंदूभाई हूँ और मुझे ही हुआ' ऐसा कहते ही पहले जो दुःख होता था वैसा अब नहीं होता। अभी तो, जैसे कि किसी पड़ोसी की बात कर रहे हों वैसे ही, 'चंदूभाई को दर्द होता है' ऐसा कह सकते हैं, कोई हर्ज नहीं है। पड़ोसी को दर्द हो, उसमें हमें क्या? पड़ोसी का असर हम पर होता है। किन्तु उसके बारे में ज्यादा राग अलापते रहें तो क्या फायदा? राग अलापने से कुछ कम होगा? किन्तु बढ़ेगा, ये बात पक्की है। राग अलापने से कम नहीं होता, किन्तु बढ़ता है। इसके बजाय हमें कहना है, 'चंदूभाई को दर्द हो रहा है'। 'ठंड किसे लगती है?' तब कहे, 'चंदूभाई को ठंड लगती है। इसलिए ओढ़ने के लिए कुछ लाओ।' व्यवहार ही पड़ोसी जैसा कर डालो। आखिर में व्यवहार तो चोखी यही बात कहता

है न, कि हमें तो इसे छोड़कर चले जाना है! हमें पता ही है, तो फिर पहले से ही व्यवहार अलग करके रखा हो तो उसमें क्या गलत है?

प्रश्नकर्ता : अभी जो वेदता है, वह बाद में सिर्फ जानता है, ऐसा हो जाता है?

दादाश्री : हाँ, फिर धीरे-धीरे सिर्फ जानता है। क्योंकि असर कम होते जाते हैं। वास्तव में असर आत्मा को नहीं पहुँचता। पहले का जो रिफ्लेक्शन आता है, उसका परिणाम भुगतना पड़ता है। मतलब वेदना थोड़ी होती है, किन्तु उसको कम करने का सरल उपाय कौन-सा है? कहना कि, 'चंदूभाई को दाढ़ में दर्द हो रहा है।' ज्यादा दर्द हो रहा हो, तो कहना कि, 'दाढ़ में दर्द थोड़ा कम हुआ है।' 'कम हुआ है' बोलते ही कम हो जाता है, जैसा आप बोलो, वैसा परिणाम मिलेगा, ऐसा है यह। और कोई कहे कि, 'ओ बाप रे! मैं मर गया', तो फिर वैसा ही भोगवटा (सुख-दुःख का असर) आएगा!

अब आत्मा व्यथित नहीं है। पहले जो व्यथित हुआ करता था, वह खुद नहीं है। शरीर की व्यथा तो होती रहती है, सिर में दर्द हो रहा हो, तो हमें कहना है, 'चंदूलाल, हम हैं न आपके साथ!' शरीर व्यथित हो, सिर व्यथित हो, मन ज़रा उछल-कूद करे, किन्तु आत्मा को कुछ नहीं होता। यह आत्मा अपना स्वरूप है। ये सारा बाहर का माल है, वो तो टेढ़ा भी निकले और सीधा भी निकले।

वेदक और ज्ञायक, दोनों भिन्न

प्रश्नकर्ता : वेदनीय कर्म के उदय के समय जो वेदना वेदता है, वह कौन? उसी समय जो वेदना होती है उसे जानता कौन है?

दादाश्री : वेदता है अहंकार और प्रज्ञा जानती है। प्रज्ञा तो वेदक को भी जानती है और जो वेदक है, वह वेदना को वेदता है। वेदक यानी अहंकार ही कहो न! अहंकार में सब कुछ आ गया। अहंकार ऐसा

मानता है कि ये दुःख मुझे ही हो रहा है। इसलिए वह वेदता है। इसी कारण वेदक कहलाता है। वेदक यानी वेदन किया हुआ मानता है, वेदा हुआ! और यहाँ प्रज्ञाशक्ति जानती है। अपने बहुत-से महात्माओं को दुःख के समय प्रज्ञाशक्ति की ओर दृष्टि नहीं रहती और वे वेदकभाव में आ जाते हैं, इसलिए दुःख बढ़ता है। और कुछ भी नहीं है। 'खुद' तन्मयाकार हो जाए तो दुःख बढ़ेगा।

मतलब हम यदि वेदक के साथ मिल जाएँ, तो बहुत दुःख होता है। इसलिए यदि ज्ञायक रहा जाए, तो दुःख बिल्कुल कम हो जाता है, दुःख रहता ही नहीं।

वेदे वह खुद नहीं। खुद तो मात्र जाननेवाला, वेदक का भी जाननेवाला, वेदना का भी जाननेवाला। यानी खुद वेदक का भी ज्ञायक और वेदना का भी ज्ञायक है। जब कि लोग तो वेदक के ज्ञायक नहीं बनते और वेदना के ज्ञायक बनते हैं। कहेंगे 'मेरा (मेरा) सिर-दर्द थोड़ा कम हो गया ऐसा लगता है', तब वेदना के ज्ञायक, तब वेदक के ज्ञायक नहीं हैं। और कहते हैं 'मेरे सिर में दर्द है।' आपको तो कहना है कि 'चंदूभाई के सिर में दर्द हो रहा है।' आप जाननेवाले और वेदनेवाला भीतर वेदता है। जिसका सिर है, वह वेदे। हमें नहीं लेना, नहीं देना, नहीं खाते, नहीं पीते, तो फिर हमारे सिर में कैसे दर्द होगा?

इसलिए वेदना को जानता है कि ये वेदना बढ़ी या घटी। ऐसा सब कुछ जो जानता है, वो वेदक किस तरह होगा? वेदक का वह ज्ञायक होता है। दाढ़ में दर्द होता है, तो किसे होता है? तब कहे, वेदक को दर्द होता है। और वेदक को कैसा दर्द हो रहा है, वेदक को क्या हो रहा है, उसे ज्ञायक जानता है। इतना भेदभाव हो तब दुःख-वेदना ज्ञायक को नहीं पहुँचती। बीच में काउन्टर पूली डाले तो ज्ञायक को वेदना नहीं पहुँचती। काउन्टर पूली नहीं डालते? एक पूली इस तरफ़ और एक पूली उस तरफ़ डालते हैं, तो फिर वजन आधा हो जाता है न?

प्रश्नकर्ता : हो जाता है।

दादाश्री : वैसे ही एक पूली डालें, तो वेदक ही भुगतता है और हम जानें कि अभी वेदक को बहुत ज्यादा वेदना है। भगवान महावीर को अनार्य देश में पत्थर मारे, अपमान किया और लोगों ने ये सब देखा, इसलिए लोगों को मन में ऐसा लगा कि, ओहो! भगवान को बहुत दुःख हो रहा है। किन्तु लोग ये नहीं देखते कि 'वेदक' कौन है और 'ज्ञायक' कौन है। भगवान खुद तो ज्ञायक थे।

जो तन्मयाकार होता है, वह मैं नहीं

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले को दुःख लगे, तब तो हम प्रतिक्रमण करते हैं। किन्तु जब खुद को ही शारीरिक वेदना होती है और दुःख लगे, तन्मयाकार हो जाएँ, तो तब प्रतिक्रमण करना है? कैसे करना है?

दादाश्री : आपको उस वेदना को देखते रहना है। वेद यानी जानना और वेद यानी भुगतना। और ज्ञानी, भुगतने से लेकर जानने तक के सभी पद (हर एक अवस्था) में होते हैं।

प्रश्नकर्ता : उसमें तन्मयाकार हो जाएँ तो?

दादाश्री : हाँ, तन्मयाकार हो जाते हैं। मेरी भी दाढ़ में दर्द हो, तो मुझे तन्मयाकार नहीं होना हो, फिर भी भीतर ऐसा हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : उस समय शुद्धात्मा भूल जाते हैं।

दादाश्री : शुद्धात्मा भूल नहीं जाते। खुद को तन्मयाकार नहीं होना है, ये ज्ञान ही 'शुद्धात्मा हूँ' ऐसा साबित करता है।

प्रश्नकर्ता : बाद में पता चलता है न? उस समय तो तन्मयाकार हो जाते हैं।

दादाश्री : हाँ, किन्तु बाद में तो एक सेकन्ड के बाद, एक मिनिट के बाद पता चलता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : मतलब हमारे पास ज्ञान हाज़िर है न? भले ही एक झपकी आ गई, लेकिन बाद में तो जागृति आ गई, ये हमें देखना है।

चंदू को वेदना होती है, हम देखते रहें

प्रश्नकर्ता : जो-जो महात्मा ज्ञान लेते हैं, उनको ही पहले के परिषह और उपसर्ग क्यों आते हैं?

दादाश्री : क्या कर सकते हैं? बंद कैसे हो सकते हैं? उनको वेदना कम होगी। सौ मन का पत्थर (गोला) लगनेवाला हो, तो उसके बजाय एक कंकर ही लगता है, किन्तु असर हुए बिना बगैर नहीं रहता। निमित्त छोड़ता नहीं है न!

आपको यह ज्ञान तो हो गया है। किन्तु श्रद्धा से शुद्धात्मा हुए हो। अभी ज्ञान से आत्मा हो जाओगे तब जानने का ही रहेगा, तब-तक तो वेदने का रहेगा। वेदने के समय तो हम आपसे कहते हैं न कि अलग रहना है। अपने 'होम-डिपार्टमेन्ट' (आत्मस्वरूप) में से इधर-उधर नहीं होना है। चाहे जितनी घंटियाँ बजे फिर भी होम-डिपार्टमेन्ट नहीं छोड़ना है। भले ही घंटियाँ बजे, चाहे बारह-सौ बार बजे फिर भी हम क्यों अपनी ऑफिस छोड़ें?

प्रश्नकर्ता : किन्तु उससे वेदना अधिक होती है।

दादाश्री : वेदना बिल्कुल भी नहीं हो सकती। वेदना होती है, क्योंकि आप चंदूभाई हो जाते हो। आपको चंदूभाई नहीं हो जाना है। चंदूभाई को वेदना हो, उसे हम देखते रहें, तो वेदना बंद हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : उस वेदना को देखते हैं इसलिए ही ऐसा लगता है कि चंदूभाई को वेदना क्यों हो रही है?

दादाश्री : चंदूभाई को वेदना होनी ही चाहिए। क्योंकि इस वेदना के कारणों की खुद ने भजना की

थी। इसलिए इस कारण में से कार्यफल आता है। आपको उनसे कहना पड़ेगा कि, चंदूभाई को वेदना होनी ही चाहिए। क्यों होती है ऐसा कहते हैं, तो हमारा कोई ऊपरी भी नहीं है या किसीने ऐसा प्रबंध भी नहीं किया है। मतलब, अगर किसीकी दखल हो तो हम कह सकते हैं कि क्यों होती है? हमें तो कहना है, 'चंदूभाई, आप तो इसीके लायक हो।'

ऐसा है, क्रमिक मार्ग में वेदकता आत्मा को कहा। अब इस वेदकता के अपने यहाँ (अक्रम में) दो अर्थ होते हैं। वेदकता 'चंदूभाई' को लागू होती है और वेद, वो वेदकता यानी जानपना (जानना) 'आपको' (शुद्धात्मा को) लागू होता है। वेदकता का अर्थ जानपना भी होता है और वेदना भी होता है। जानपना 'आपका' है कि 'चंदूभाई' को इतनी वेदना उत्पन्न हुई। अब अगर 'आप' खुद यहाँ से स्लीप होकर उस वेदना के मारे उसमें एकाकार हो जाओ, तो वेदना का असर ज़्यादा होगा। और थोड़ा दूर रहोगे, तो कम असर होगा। किन्तु आखिर में निबेड़ा तो लाना पड़ेगा न!

अब आप शेर की संतान हो। ये सारी उलझनें तो होती ही रहेंगी, 'पेट में क्यों दर्द हुआ? किस कारण हुआ?' तब कहना, 'ठीक होने के लिए दर्द हुआ।' वैसे भी दर्द तो भीतर पड़ा हुआ ही था, उसका उदयकाल नहीं आया था। तो अब उसका उदयकाल आने पर थोड़ी देर के बाद ठीक भी हो जाएगा, आराम से सो जाओ। जो था वो तो खाली हो जाना चाहिए न?

हमें भी कभी-कभी शारीरिक वेदना होती है, नहीं होती ऐसा नहीं है। हम जानते हैं कि, ओहोहो! ठीक होने के लिए ये आई है। अभी कोई मारने के लिए नहीं आया है। मारने आया हो उसे भी पहचानते हैं और ठीक होने आया हो, उसे भी पहचानते हैं।

मुख्य सेन्ट्रों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद (दादा दर्शन): (079) 27540408, वडोदरा (दादा मंदिर): (0265)2414142, राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भूज त्रिमंदिर: (02832) 290123, गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, मुंबई: 9323528901, दिल्ली: 9310022350, बेंगलूर: 9590979099, कोलकता: 033-32933885 यु.के.: +44-7956476253, यु.एस.ए.: +1-877-505-3232, आस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063

जो हो रहा है उसे देखते रहो

प्रश्नकर्ता : मान लीजिए कि अभी मेरी तबियत खराब हो गई और शरीर अच्छा रहे इसलिए मुझे कोई ऑपरेशन करवाना पड़ा, तो फिर अगले जन्म में भी मुझे फिर से ये कर्म भुगतना पड़ेगा?

दादाश्री : नहीं, नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं है। आपको इतना ध्यान रखना है कि आप चंदूभाई हो या शुद्धात्मा हो? फिर आगे, आप कर्ता हो या व्यवस्थित कर्ता है? फिर आपको कुछ भी नहीं छूएगा, आपको (नये) बीज नहीं पड़ेंगे। अभी तो कड़वे-मीठे फल भुगतने पड़ेंगे। कड़वा आए तो कड़वा भी भुगतना पड़ेगा और मीठा आए तो मीठा भी भुगतना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : ऑपरेशन करवाया इसलिए मैंने वो कर्म पूरी तरह से नहीं भुगता, तो फिर अगले जन्म में मुझे फिर से भुगतना है?

दादाश्री : नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं है। जिसमें साइंटिफिक सरकमस्टेंशियल एविडेन्स (संयोग) मिल गए, तो वो कर्म पूरा हो गया, उसमें फिर दवाखाना मिला हो या कुछ भी मिला हो। अब सिर्फ उसे नयी वेदना उत्पन्न होनेवाली नहीं है। ये जो पुरानी वेदना है न, वह इफेक्ट है। कॉज़ेज़ की इफेक्ट है, यह। नये कॉज़ेज़ उत्पन्न नहीं होते।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन ये इफेक्ट कब-तक चलेगी?

दादाश्री : जीवित हैं तब तक चलेगी। बस, हमें वेदना को देखते रहना है। नयी वेदना उत्पन्न नहीं होती और पुरानी को देखते रहना है। हम उसके ज्ञाता-दृष्टा हैं!

जय सच्चिदानंद

अडालज त्रिमंदिर में आयोजित हुआ चौथा हिन्दी शिविर

अडालज त्रिमंदिर संकुल में चौथा हिन्दी शिविर १७ से २१ मई २०१२ के दौरान आयोजित हुआ। भारत के विभिन्न राज्यों से १४०० जितने महात्मा-मुमुक्षुओं ने इस शिविर में भाग लिया। शिविरार्थी महात्माओं के लिए प्रश्नोत्तरी सत्संग, ज्ञानविधि, भक्ति, गरबा, सामायिक, प्रक्षाल-पूजा-आरती तथा दर्शन जैसे वैविध्यपूर्ण कार्यक्रम रखे गए।

शिविर के दौरान दो सेशन में प्रतिक्रमण (संक्षिप्त) की हिन्दी किताब का वाचन और उस विषय पर आत्मज्ञानी पूज्यश्री दीपकभाई के द्वारा विस्तृत सत्संग हुआ। महात्माओं के द्वारा पूछे गए कई सारे प्रश्नों के समाधान पूज्यश्री के द्वारा पाकर महात्माओं ने अपनी आत्मजागृति को बढ़ाया। दिनांक १९ मई को शाम को आयोजित ज्ञानविधि में ७०० जितने मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान पाया। ज्ञान लेने आए मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान पाकर आत्मसंतुष्टि प्रकट की। ज्ञानविधि के बाद रात को गरबा का आयोजन किया गया। पूज्य दीपकभाई की प्रत्यक्ष हाज़िरी में दादाई भक्तिपद में लीन होकर सभी महात्मा उल्लसित होकर नाच उठे। महात्माओं ने पूज्य नीरू माँ के निवास स्थान-वात्सल्य के दर्शन तथा त्रिमंदिर में श्री सीमंधर स्वामी भगवान का प्रक्षाल-पूजा-आरती किए। दि. २० मई को सुबह में पूज्य दीपकभाई के दर्शन का विशेष कार्यक्रम भी रखा गया। पूज्य दीपकभाई के प्रत्यक्ष दर्शन पाकर महात्माओं ने अति धन्यता का अनुभव किया। शिविर में आए महात्माओं के बच्चों के लिए विशेष रूप से दो दिन के संस्कार सिंचन शिविर का भी आयोजन दि. १८-१९ मई को किया गया। जिसमें दादाजी का ज्ञान बच्चों को समझ में आए इस तरह विभिन्न प्रकार से शिखाया गया। ७ से १६ साल की उम्र वाले १५० जितने बच्चों-युवकों ने उसमें भाग लिया।

टीवी पर कई दिनों-सालों से सत्संग देख रहे कई सारे महात्मा-मुमुक्षु पहली बार ही अडालज त्रिमंदिर संकुल में पधारे थे। सभी को विशेष रूप से शांति और आनंद की अनुभूति हुई। कई महात्माओं ने वे महाविदेह क्षेत्र में, तो कई ने देवभूमि पर आ गए हैं, तो कई ने यहाँ से जाने को दिल नहीं करता, ऐसे अपने अनुभव कहें। ऐसे हिन्दी शिविर के आयोजन हर साल होने ही चाहिए ऐसे भाव महात्माओं ने प्रकट किए। आवास, भोजन और अन्य सभी तरह की अच्छी सुविधा पाकर तथा सेवार्थी महात्माओं का प्रेममय व्यवहार देखकर शिविरार्थीओं ने उनका दिल से धन्यवाद व्यक्त किया।

इस अवसर पर आप्तवाणी श्रेणी-८ और बच्चों के लिए चित्रवार्ता - भगवान कहाँ रहते हैं? - इन दो हिन्दी किताबों का पूज्य दीपकभाई के करकमलों के द्वारा विमोचन हुआ। हिन्दी क्षेत्र के महात्माओं की विशेष माँग को ध्यान में रखते बच्चों के लिए प्रकाशित हो रहे अक्रम एक्सप्रेस मैगज़ीन के हिन्दी संस्करण का भी पूज्य दीपकभाई के द्वारा विमोचन हुआ। यह हिन्दी पत्रिका मई २०१२ महिने से हर महिने प्रकाशित होगी। सभी महात्माओं ने इस पवित्र भूमि पर हुए अलौकिक अनुभव कर के दादाजी का आत्मविज्ञान सारा जग पाए ऐसी प्रबल जगकल्याण की भावना प्रकट की। दि. २० मई शाम को पूज्य दीपकभाई के सत्संग के बाद इस शिविर का समापन हुआ।

दि. २१ मई को शिविर में पधारे महात्माओं के लिए पूज्य दीपकभाई की निश्रा में एक दिन की महुडी-तारंगा तीर्थस्थलों की यात्रा का आयोजन किया गया। ७०० हिन्दी शिविरार्थी महात्माओं ने इस यात्रा में भाग लिया। सभी महात्माओं ने महुडी में घंटाकर्ण महावीर देव के दर्शन किए, पूज्यश्री ने जगत्कल्याण की भावना करवाई और सीमंधर स्वामी भगवान की आरती की। कोट्यार्क मंदिर में पूज्यश्री के साथ सत्संग के दौरान कई महात्माओं ने अपने सुंदर अनुभव कहें। शाम को तारंगा पहुँचकर महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ दूसरे तीर्थकर श्री अजितनाथ भगवान के प्राचीन देरासर में दर्शन किए। पूज्यश्री ने देरासर में जगत्कल्याण की भावना और सिद्धस्तुति करवाई। मंदिर परिसर में गरबा का आयोजन हुआ, जिसमें सारे महात्मा भक्तिरस में लीन हो गए। पूज्यश्री के साथ गरबा करते करते महात्मा अति रोमांचित हो उठें। अंत में दादाजी के एन्थम के गान के साथ जगत्कल्याण की भावना करते यात्रा का समापन हुआ। आत्मज्ञानी के साथ यात्रा का अनुभव शिविरार्थी महात्माओं के लिए अविस्मरणीय रहा।

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाइट्स

१ जनवरी - गोधरा त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव के अंतिम दिन त्रिमंदिर में मुख्य तीन भगवंतो की प्राणप्रतिष्ठा हुई। हज़ारों महात्मा प्राणप्रतिष्ठा में संमिलित हुए। आसपास के गाँवों में से बड़ी संख्या में लोग दर्शन करने के लिए आएँ। प्रतिष्ठा के बाद प्रक्षाल-पूजा-आरती में महात्माओं ने पूज्यश्री की निश्रा में उल्लासपूर्वक भाग लिया। महोत्सव के दौरान महात्माओं ने परम पूज्य दादा भगवान तथा पूज्य नीरुमाँ की सूक्ष्म हाज़िरी का अनुभव किया तथा अपने जीवन में एक अनुपम अनुभूति महसूस की।

२ जनवरी - सुनहरे प्रभात में गोधरा त्रिमंदिर के मंगल द्वार पूज्यश्री के करकमलों से सबके लिए खुले रखे गएँ। बाद में तीनों भगवंतो की आरती की गई। गोधरा के स्थानिक महात्माओं ने इस अवसर का लाभ पाकर धन्यता प्रकट की।

७-८ जनवरी - अड़ालज त्रिमंदिर में सत्संग - ज्ञानविधि १४०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

१४-२१ जनवरी - आप्तवाणी-४ पर सत्संग पारायण। पूरा सत्संग हाल महात्माओं की हाज़िरी से खचाखच भर गया। विदेशों से आएँ ३०० से ज़्यादा NRI तथा विदेशी महात्माओं ने भाग लिया। महात्माओं ने सत्संग दरमियान ज्ञान संबंधी विशेष समझ की प्राप्ति से अलौकिकता आत्मजागृति का दिव्य अनुभव किया।

२२ जनवरी - अड़ालज त्रिमंदिर में ७०० जितने महात्माओं ने अपने घर या ऑफिस के लिए ली हुई सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की पूज्यश्री के द्वारा प्रतिष्ठा हुई। महात्माओं ने प्रतिष्ठा दौरान नमस्कार विधि, भक्ति, पूजन, आरती में भाग लिया। अंत में महात्मा सीमंधर स्वामी की प्रतिमा को सिर पर रख कर आनंद-उल्लासपूर्वक नाच ऊठे।

३० जनवरी-१ फरवरी - परिणीत बहनों के लिए आयोजित हुई वार्षिक विशेष शिविर में २२०० बहनों ने भाग लिया।

३-५ फरवरी - परिणीत भाईयों के लिए आयोजित हुई वार्षिक विशेष शिविर में १५०० भाईयों ने भाग लिया।

९ फरवरी - मोरबी के पास श्रीमद् राजचंद्र जी की जन्मभूमि ववाणिया की ओर जाने वाले रोड पर निर्माण होनेवाले नए त्रिमंदिर का पूज्यश्री के करकमलों द्वारा भूमिपूजन हुआ। ३००० महात्माओं ने आनंद-उल्लास के साथ इसमें भाग लिया।

१०-१२ फरवरी - भावनगर में सत्संग-ज्ञानविधि। ८०० जितने मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

१३-१५ फरवरी - जैन तीर्थस्थल पालिताणा में भावनगर, सुरेन्द्रनगर, अमरेली, जूनागढ जिल्लों के सेवार्थी महात्माओं के लिए शिविर का आयोजन हुआ। महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ आनंदपूर्वक समय बिताया तथा अपने सुंदर अनुभव कहे।

१७-१९ फरवरी - मुंबई के घाटकोपर में सत्संग-ज्ञानविधि। १३०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की, जिसमें प्रथम बार ३०० जितने नोन-गुजराती मुमुक्षु थें।

२०-२२ फरवरी - मुंबई, पूना, अमरावती सेन्टर के सेवार्थी महात्माओं के लिए महाबलेश्वर में शिविर का आयोजन हुआ। ३५० सेवार्थीओं ने पूज्यश्री के साथ सत्संग, गरबा, बोटिंग, साइट-सीइंग इत्यादि का आनंद लिया।

२४-२६ फरवरी - भोपाल में २०१० के बाद दूसरी बार सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित हुए। ६५० जितने मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान लिया। सेवार्थी महात्माओं के लिए विशेष रूप से सत्संग आयोजित किया गया।

२८ फरवरी-१ मार्च - पटना में २००९ के बाद दूसरी बार सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित हुए। ४८० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान लिया। नियमित सत्संग में आनेवाले महात्माओं के लिए विशेष रूप से सत्संग रखा गया।

६ मार्च - पूज्य दीपकभाई का ४२वाँ ज्ञानदिन अड़ालज त्रिमंदिर में मनाया गया। पूज्यश्री ने उपस्थित सभी महात्माओं से जगत् कल्याण का कार्य प्योरिटि, अखंड-शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन कर के, कषाय रहित हो उसके लिए आशीर्वाद माँगे। शाम को पूज्यश्री ने सभी महात्माओं के साथ ऊणोदरी भवन में प्रसाद लिया।

७-११ मार्च - ब्रह्मचारी साधकों के लिए महेशाणा में पाँच दिन के शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें पूज्यश्री के द्वारा ब्रह्मचर्य (पूर्वार्ध) पर पारायण, प्रश्नोत्तरी सत्संग, आप्तपुत्रों द्वारा ग्रुप डिस्कशन तथा विविधतापूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

१२ मार्च - पूज्यश्री के साथ ४५० जितने अपरिणीत साधक-साधिकाएँ अँबा माताजी के दर्शन के लिए अँबाजी यात्राधाम गए। पूज्यश्री ने ब्रह्मचर्य के लिए प्रार्थना करवाई और अँबा माँ के पास प्योरिटि एवं ब्रह्मचर्य के लिए शक्तियाँ मँगवाई। मंदिर परिसर में ब्रह्मचारी भाईयों-बहनों ने पूज्यश्री के साथ गरबा किया।

दादावाणी

- १३-१६ मार्च** - ब्रह्मचारी बहनों के लिए महेसाणा में चार दिवसीय ब्रह्मचर्य शिविर का आयोजन किया गया।
- १७-१८ मार्च** - अडालज त्रिमंदिर में सत्संग-ज्ञानविधि। २३०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान लिया।
- १९ मार्च** - पूज्य नीरुमाँ की छठी पुण्यतिथि के अवसर पर सुबह पूज्य नीरू माँ की समाधि पर महात्माओं ने चरणविधि, प्रार्थना, आरती की। इस अवसर पर पूज्य नीरूमाँ की विशेष विडियो फिल्म बताई गई। रात में समाधि पर आप्तकुमारों-कुमारीओं में से अनुक्रम से आप्तपुत्रों-पुत्रीओं में पदोन्नति पाएँ तथा आप्तसिंचन की नई बेच के साधक-साधिकाओं की समर्पण विधि हुई। महात्माओं की हाजिरी से पूज्य नीरूमाँ की समाधि का केम्पस खचाखच भर गया।
- २० मार्च-४ अप्रैल** - यु.के. के एश्टन, ब्रेडफर्ड, वोलसोल, हेरो (लंदन) जैसे शहरों में पूज्य दीपकभाई के सत्संग-ज्ञानविधि के कार्यक्रम आयोजित किए गए। ६०० जितने मुमुक्षुओं ने इस प्रवास के दौरान आत्मज्ञान प्राप्त किया। लेस्टर के पुराने महात्माओं के लिए विशेष सत्संग का आयोजन किया गया। आइल ऑफ वाइट में हर साल की तरह यु.के. के महात्माओं के लिए ५ दिन के शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें प्रश्नोत्तरी सत्संग के अलावा क्रोध पुस्तक पर पारायण भी हुआ। ४७५ महात्माओं ने इस शिविर में हिस्सा लिया।
- ११-१५ अप्रैल** - २०११ के बाद दूसरी बार जर्मनी के ऑबरस्टाफे में पूज्य दीपकभाई के सान्निध्य में स्पीरिच्युअल रिट्रिट आयोजित हुई। जिसमें १२० जितने पुराने महात्मा आएँ तथा ३३० जितने नए मुमुक्षु ने भाग लेकर आत्मज्ञान पाया। १५ अलग-अलग देशों से इस रिट्रिट में मुमुक्षु आएँ। इस रिट्रिट में भक्ति, गरबा, सामायिक, दर्शन तथा सीमंधर स्वामी की मूर्तियों की विधि जैसे कार्यक्रम भी हुए।
- १२ अप्रैल** - पूणे में प्रथम बार बड़े पैमाने पर सत्संग कार्यक्रम का आयोजन हुआ। पूणे तथा महाराष्ट्र के २५०० जितने मुमुक्षु-महात्माओं ने पधारकर पूज्यश्री के सत्संग का रसपान किया। १५५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। पूणे सेन्टर के सेवार्थी महात्माओं के लिए दर्शन का विशेष कार्यक्रम भी रखा गया।
- २५-२६ अप्रैल** - भूज में सत्संग-ज्ञानविधि। १००० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान लिया।
- २७-२९ अप्रैल** - मोरबी में सत्संग-ज्ञानविधि। ८०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान लिया।
- ५-६ मई** - महेसाणा सेफ्रोनी रिसोर्ट में भारत के विभिन्न सत्संग सेन्टरों तथा अलग-अलग विभागों के ३२५ जितने सेन्टर कॉर्डिनेटरों ने विनय-नम्रता की थीम पर आयोजित वर्कशोप में सत्संग, नाटक तथा विविध गतिविधियों में हिस्सा लिया।
- ७-८ मई** - महेसाणा में आयोजित सत्संग और ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान ६५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान लिया।
- ९ मई** - पूज्य दीपकभाई का ६० वाँ जन्मदिन अडालज त्रिमंदिर में मनाया गया। सुबह में पूज्यश्री ने मंदिर में पधार कर पूजन-दर्शन करने के बाद उपस्थित महात्माओं के आशीर्वाद लिए। महात्माओं ने पूज्यश्री की दीर्घायु तथा अखंड तंदुरस्ती के लिए १ घण्टा कीर्तन भक्ति की। शाम को ATPL के ब्लीस गार्डन में लगभग ३५०० महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ आनंदोत्सव मनाया।
- ११ मई** - अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के द्वारा साबरमती बस स्टेन्ड से झुंडाल चौकड़ी तक के मार्ग को 'पूज्य दादा भगवान मार्ग' तथा कोबा सर्कल से इन्दिरा ब्रीज के बाद एयरपोर्ट की ओर जानेवाले रोड पर जो टी सर्कल है उसे 'पूज्य दादा भगवान सर्कल' के नाम से घोषित किया गया।
- १२-१३ मई** - नडियाद में सत्संग-ज्ञानविधि। ९०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान लिया। पूज्यश्री ने ज्ञानी पुरुष श्रीमद् राजचंद्र ने जिस जगह पर आत्मसिद्धि शास्त्र की रचना की थी, उस स्मारक स्थल का दौरा करके दर्शन किए।
- १४-१६ मई** - आप्तसिंचन के साधकों के साथ हर साल की तरह त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें दूसरी, तीसरी और चौथी बेच के २४ साधकों के लिए पूज्यश्री के द्वारा निजी मार्गदर्शन तथा सत्संग के कार्यक्रम रखे गए। पूज्यश्री भादरण गाँव के महात्माओं को मिलें। पूज्यश्री, दादा के कुलदेवी भद्रकाली माताजी के मंदिर दर्शन के लिए भी गए।
- १७ से २१ मई** - हिन्दी शिविर में १४०० हिन्दी भाषी महात्मा भारत के विभिन्न राज्यों से आएँ। ७०० जितने मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान पाया। २१ तारीख को शिविरार्थी महात्माओं के लिए महुडी-तारंगा की यात्रा रखी गई।

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

| | | | |
|----------------|---|------------------------|---------------------|
| मैंगलोर | दिनांक : 18 जुलाई, | समय: शाम 4-30 से 6-30, | संपर्क : 9341350019 |
| स्थल : | ध्यान मंदिर, शारदा विद्यालय, कोडीयलबीयल, पी.वी.एस कलाकुंज के पास, मैंगलोर. | | |
| मैंगलोर | दिनांक : 18 जुलाई, | समय: रात 8-30 से 10, | संपर्क : 9341350019 |
| स्थल : | श्री उमाधाम भोजराव लेन, गुजराती स्कूल के पास, कुद्रोली, मैंगलोर. | | |
| उडुपी | दिनांक : 19 जुलाई, | समय: शाम 6 से 8, | संपर्क : 9743577132 |
| स्थल : | भुवनेन्द्र मंटप, श्री लक्ष्मी वेंकटेशा टेम्पल (SLV), वी.टी. रोड, उडुपी. | | |
| कार्कल | दिनांक : 20 जुलाई, | समय: सुबह 10 से 12, | संपर्क : 9820330361 |
| स्थल : | महावीर भवन, अनेकेरे, हीरीयांगाडी रोड, कार्कल. | | |
| बेंगलोर | दिनांक : 21 जुलाई, | समय: सुबह 9-30 से 12, | संपर्क : 9590979099 |
| स्थल : | उमिया भवन, श्री पाटीदार परिवार समाज, # 980 सर्विस रोड, विजयनगर दूसरा स्टेज. | | |
| बेंगलोर | दिनांक : 21 जुलाई, | समय: शाम 6 से 8, | संपर्क : 9342530176 |
| स्थल : | श्री गणपती सेवा मंडली, माणसा मंथना मंदिर होल, पहली मंजिल, बी.ई.एल. कोलोनी, जलाहाल्ली. | | |
| बेंगलोर | दिनांक : 22 जुलाई, | समय: सुबह 10 से 12-30, | संपर्क : 9035329897 |
| स्थल : | बसवानागुडी. | | |
| बेंगलोर | दिनांक : 22 जुलाई, | समय: शाम 4-30 से 7, | संपर्क : 9590979099 |
| स्थल : | Whitefield. | | |
| मदुराई | दिनांक : 23 जुलाई, समय: सुबह 9 से 11, रात 8-30 से 10-30, | संपर्क : 9443350695 | |
| | दिनांक : 24 जुलाई, समय: सुबह 9 से 11, | | |
| स्थल : | तेरापंथ भवन मदुराई, 18,19 मुतीयाह पील्लाई लेन, मारावार चावडी, विनयनगर मंदिर के पीछे. | | |
| सलेम | दिनांक : 24 जुलाई, | समय: शाम 7-30 से 9-30 | संपर्क : 9362108322 |
| स्थल : | गुजराती समाज कल्याण मंडपम, सेन्नीस गेट वे होटेल के सामने, नं. 102/जी, अलागापुरम मेईन रोड. | | |

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

| | |
|---------------|---|
| भारत | ✦ 'सोहम' पर हर रोज़ दोपहर १-३० से २, शाम ६-३० से ७ (रिपीट) (हिन्दी में) |
| | ✦ 'दूरदर्शन-गिरनार' पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० और दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में) |
| | ✦ 'अरिहंत' पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३० और शाम ५ से ५-३० (गुजराती में) |
| | ✦ 'दूरदर्शन-सप्तगिरि' पर सोम से शुक्र सुबह ७-३० से ८ (तेलुगु में) - नया |
| USA | ✦ 'TV Asia' पर सोम से शुक्र, सुबह ७-३० से ८ (गुजराती में) |
| USA-UK | ✦ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (गुजराती में) |
| Europe | ✦ 'वीनस' (स्काय प्लेटफार्म-चैनल 805) पर हर रोज़ रात १० से ११ (हिन्दी में) |
| | ✦ समग्र विश्व में (भारत और यु.एस.ए. के अलावा) सोनी टीवी पर सोम से शुक्र सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में) |

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

| | |
|---------------|---|
| भारत | ✦ 'दूरदर्शन' पर हर बुध-गुरु-शुक्र सुबह ९ से ९-३० (हिन्दी में) - नई दृष्टि, नई राह |
| | ✦ 'आस्था' पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-५० (हिन्दी में) |
| | ✦ 'दूरदर्शन' डीडी-गिरनार पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में) |
| | ✦ 'दूरदर्शन-सह्याद्रि' पर सुबह ७-३० से ८ (सोम-मंगल-गुरु-शनि), सुबह ७-१५ से ७-३० (बुध-शुक्र) (मराठी में) |
| | ✦ 'अरिहंत' पर हर रोज़ सुबह ९ से ९-३० और शाम ८-३० से ९ (गुजराती में) |
| | ✦ समग्र विश्व में (भारत के अलावा) 'SAHARA ONE' पर सोम से शुक्र, सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में) |
| USA-UK | ✦ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में) |

दादावाणी

गुजरात के अलावा विभिन्न सत्संग केन्द्रों में आयोजित गुरुपूर्णिमा का कार्यक्रम

| सेन्टर | समय | कार्यक्रम का पता |
|----------|---------------------------|--|
| दिल्ली | (३० जून) (१ जुलाई) | शाम 6 से 8-30 सुबह 10-30 से शाम 4 (आप्तपुत्र सत्संग) लौरैल हाईस्कूल, शिवा मार्केट के सामने, पीतमपुरा.9811488263 |
| भोपाल | (३० जून) (१ जुलाई) | शाम 6 से 8 सुबह 11 से शाम 4 (आप्तपुत्र सत्संग) जनकविहार कोम्प्लेक्ष, मालवीयानगर. 9425024405 |
| अमरावती | (१ जुलाई) | सुबह 9-30 से दोपहर 2 दोशी वाडी, अलंकार सीनेमा के पास. 9823127601 |
| हैदराबाद | (१ जुलाई) | सुबह 9 से शाम 4 कुल्पाक्की जैन तीर्थ 9989877786 |
| पूणे | (१ जुलाई) | सुबह 11 से शाम 4 होटल गोल्डन एमरल्ड, महर्षिनगर के कोर्नर पर, मार्केट यार्ड. 9860797920 |
| इन्दौर | (३ जुलाई) | शाम 5 से 8 कच्छी जैन धर्मशाला, 97, स्नेहलता गंज, भंडारी ब्रीज के पास. 9893545351 |
| मुंबई | (३ जुलाई) | शाम 4 से 8-30 हालारी विसा ओशवाल समाज वाडी, 118/112, दादासाहेब फालके रोड, दादर (से.रे.) 9323528901 |
| बेंगलोर | (३ जुलाई) | शाम 6 से 9 नं. 301, 9-मेइन, 12वाँ क्रोस, अयोध्या पार्टी होल के पास, जयनगर. 9590979099 |
| जबलपुर | (३ जुलाई) | शाम 4 से 8 युथ होस्टेल, रानीताल चौक के पास. 9425160428 |
| जयपुर | (३ जुलाई) | शाम 5 से 9 507, रिद्धि-सिद्धि टावर, विद्याधरनगर, सेक्टर 5, सीकार रोड. 9351408285 |
| भिलाई | (३ जुलाई) | शाम 6 से 9 दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोदा वोटर टेन्क के पास. 9827481336 |
| रायपुर | (३ जुलाई) | शाम 6 से 8 वृदावन हाल, IDBI बैंक के पास, कबीर चौक. 9329644433 |
| कोलकाता | (८ जुलाई) | सुबह 10 से शाम 4 लक्ष्मीनारायण मंदिर, शरत बोस रोड. 033-32933885 |

नोट : गुजरात में हरेक सत्संग सेन्टर पर गुरुपूर्णिमा 3 जुलाई को मनाई जाएगी। अधिक जानकारी के लिए (079)39830400 पर संपर्क करें।

Puja Deepakbhai's Australia Satsang Schedule 2012

| Date | Day | Venue | Program | From | To | Venue | Contact |
|--------|------|-----------|-------------------|---------|---------|---|--------------------------------|
| 17-Jul | Tue | SYDNEY | Aptaputra Satsang | 7:00 PM | 9:00 PM | Redgum Function Center, 2 Lane Street, Wentworthville, NSW - 2145 | |
| 18-Jul | Wed | SYDNEY | Satsang | 7:00 PM | 9:30 PM | Bowman Hall, Civic Centre, Campbell Street, Blacktown, NSW - 2148 | +61421127947 + 61 402179706 |
| 19-Jul | Thur | SYDNEY | Gnanvidhi | 6:00 PM | 9:00 PM | | |
| 20-Jul | Fri | SYDNEY | Mahatma Shibir | 9:30 AM | 6:00 PM | Blue Lagoon Beach Resort, 10 | +61 468611299 |
| 21-Jul | Sat | SYDNEY | Mahatma Shibir | 9:30 AM | 6:00 PM | Bateau Bay Road, Bateau Bay, NSW 2261 | +61 438489185 |
| 22-Jul | Sun | SYDNEY | Mahatma Shibir | 9:30 AM | 6:00 PM | | |
| 23-Jul | Mon | MELBOURNE | Aptaputra Satsang | 7:00 PM | 9:00 PM | Shirdi Sai Baba Temple, 32 Halley Avenue, Camberwell, Victoria - 3125 | +61 433059550 +61 403886647 |
| 24-Jul | Tue | MELBOURNE | Satsang | 7:00 PM | 9:00 PM | | |
| 25-Jul | Wed | MELBOURNE | Gnanvidhi | 6:00 PM | 9:00 PM | | |
| 27-Jul | Fri | PERTH | Aptaputra Satsang | 7:30 PM | 9:00 PM | Jewish Community Centre, 61 Woodrow Avenue, Yokine, WA - 6060 | +61 430148386 +61 425255677 |
| 28-Jul | Sat | PERTH | Gnanvidhi | 4:00 PM | 7:00 PM | | |
| 29-Jul | Sun | PERTH | Satsang | 4:00 PM | 6:30 PM | | |

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

Contact telephone no. for all centers in USA & Canada: 1-877-505-DADA (3232), email:usa@dadabhagwan.org

| Date | Day | Venue | Program | From | To | Venue | Email/Tel Extension |
|--------|-----|-------------|--------------------|----------|----------|---|---|
| 29-Jun | Fri | Dallas | GP Shibir | 10.00 AM | 6.30 PM | | |
| 30-Jun | Sat | Dallas | GP Shibir | 10.00 AM | 6.30 PM | | |
| 30-Jun | Sat | Dallas | Aptaputra Satsang | 4.00 PM | 6.30 PM | | gp@dadabhagwan.org |
| 1-Jul | Sun | Dallas | GP Shibir | 10.00 AM | 1.00 PM | Hyatt Regency DFW 2334 N. International Parkway, Adjacent to Terminal C, Dallas-Fort Worth Airport, TX,75261 | Tel. Ext. 10 |
| 1-Jul | Sun | Dallas | Gnanvidhi | 5.00 PM | 7.30 PM | | |
| 2-Jul | Mon | Dallas | GP Shibir | 9.30 AM | 6.30 PM | | |
| 3-Jul | Tue | Dallas | Gurupurnima | 8.00 AM | 12.00 PM | | |
| 3-Jul | Tue | Dallas | Gurupurnima | 4.00 PM | 7.00 PM | | |
| 4-Jul | Wed | Dallas | GP Shibir | 9.30 AM | 6.30 PM | | |
| 7-Jul | Sat | Phoenix | New Mhtm Satsang | 4.30 PM | 7.00 PM | | mehta.vidhi@gmail.com |
| 8-Jul | Sun | Phoenix | Aptaputra Satsang | 10.00 AM | 12.30 PM | Indo-American Community Center 2809 W. Maryland Avenue,Phoenix,AZ,85017 | Tel. Ext: 1008 |
| 8-Jul | Sun | Phoenix | Gnanvidhi | 5.00 PM | 7.30 PM | | |
| 9-Jul | Mon | Phoenix | Aptaputra Satsang | 7.00 PM | 9.30 PM | | |
| 14-Jul | Sat | Los Angeles | Satsang | 4.30 PM | 7.00 PM | Jain Temple 8072 Commonwealth Ave,Buena Park,CA ,90621 | Tel. Ext: 1009 boloram@sbcglobal.net |
| 15-Jul | Sun | Los Angeles | Aptaputra Satsang | 10.00 AM | 12.30 PM | | |
| 15-Jul | Sun | Los Angeles | Gnanvidhi | 5.00 PM | 7.30 PM | | |

अडालज त्रिमंदिर

दि. २ अगस्त (गुरु), सुबह ९-३० से १२ - रक्षाबंधन के अवसर पर दर्शन-भक्ति

दि. १० अगस्त (शुक्र), रात १० से १२ - जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति

दि. ११ अगस्त (शनि), शाम ४-३० से ७ - सत्संग तथा १२ अगस्त (रवि), दोपहर ३-३० से ७ - ज्ञानविधि

पर्युषण पर्व - दि. १२-१९ सितम्बर तथा दर्शन - दि. २० सितम्बर २०१२

पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-८ और क्लेश रहित जीवन (गुजराती) किताबों का वाचन और उन विषयों पर सत्संग होगा।
हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी।

दि. २० सितम्बर (गुरु) सुबह ९ बजे - दर्शन का विशेष कार्यक्रम

हैदराबाद

दि. १७-१८ अगस्त (शुक्र-शनि), शाम ६-३० से ९-सत्संग तथा १९ अगस्त (रवि), शाम ५-३० से ९-ज्ञानविधि

स्थल : भारतीय विद्या भवन, 5/9/1105, बशीर बाग, किंग कोठी रोड, हैदराबाद-29. संपर्क : 9989841786

बेंगलोर

दि. २१ अगस्त (मंगल), शाम ६-३० से ९ - सत्संग तथा २२ अगस्त (बुध), शाम ६ से ९-३० - ज्ञानविधि

स्थल : शिक्षक सदन ओडिटोरियम होल, कावेरी भवन के सामने, के.जी.रोड, बेंगलोर-२. संपर्क : 9590979099

औरंगाबाद : दि. ६ अक्टूबर (शनि) - सत्संग तथा ७ अक्टूबर (रवि) - ज्ञानविधि

जयपुर : दि. ९ अक्टूबर (मंगल) - सत्संग तथा १० अक्टूबर (बुध) - ज्ञानविधि

दिल्ली : दि. १२-१३ अक्टूबर (शुक्र - शनि) - सत्संग तथा १४ अक्टूबर (रवि) - ज्ञानविधि

आफ्रिका-दुबई : दि. २३ अक्टूबर से ११ नवम्बर, २०१२

जून २०१२
वर्ष - ७, अंक - ८
अखंड क्रमांक - ८०

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 30-6-2012
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

‘हम हैं न आपके साथ, घबराना मत’

अब ‘आपको’ वेदना का अनुभव नहीं होता है। उस अनुभव को (‘आपको’) ‘देखना’ है कि ‘ओहोहो, चंदूभाई! बहुत टेन्शन का अनुभव हो रहा है? हम हैं न आपके साथ। कोई बात नहीं, थोड़ी-सी चाय पी लो।’ इस प्रकार हम उनसे बातें करते रहे। यही अंतिम उपयोग है! ‘आपको’ चंदूभाई (फाइल नं.1) को ‘देखते’ ही रहना है। चंदूभाई का टेन्शन कितना बढ़ा-घटा, वो सबकुछ ‘देखते’ रहो। फिर आप उनसे कहे, ‘हम हैं न आपके साथ, घबराना मत।’ बस, इतना ही करना है। यही उपयोग रखना है। चाहे कोई भी टेन्शन आए, किन्तु चंदूभाई को आता है न! आपको कहाँ आता है?

- दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.